श्रेयस तलपड़े की निर्देशन में दूसरी पारी

सजग सरस युवा पत्रिका

अक्तूबर 2021 ₹ 30.00

मुक्ता

अपनों के साथ मनाएं दीवाली

सोचसमझ कर करें प्यार

समलैंगिकता

मिथक बनाम सच

बौयफ्रैंड के साथ दीवाली

शोहरत बटोरतीं अनुष्का श्रीवास्तव

स्टाइल औफ द मंथ

VISIT…

LANZAROTE

Caliente.COM

Piramal

टेटमोसॉल
20:20
कप कॉन्टेस्ट

only books magazine

टेटमोसॉल
रोज़ लगाना^ मतलब
वर्ल्ड कप के दौरान इनाम
जीतने का मौक़ा पाना!

Monosulfiram Medicated Soap
TETMOSOL

सभी मैचेस के सही विजेता बताओ और ₹ 1 करोड़ धन राशी जीतने का मौक़ा पाओ!*

1 विजेता
कम से कम 30 मैचेस का सही अनुमान लगाएं और गाडी जीतने का मौक़ा पाएं

मारुति सुज़ुकी स्विफ्ट, ZXI मैनुअल (पेट्रोल)

2 विजेता
कम से कम 20 मैचेस का सही अनुमान लगाएं और बाइक जीतने का मौक़ा पाएं

बजाज पल्सर 150

5 विजेता
कम से कम 15 मैचेस का सही अनुमान लगाएं और AC जीतने का मौक़ा पाएं

वोल्टास 1.4 टन, 5 स्टार AC

10 विजेता
कम से कम 10 मैचेस का सही अनुमान लगाएं और फ्रिज जीतने का मौक़ा पाएं

सैमसंग 253L डबल डोर रेफ्रिजरेटर

50 विजेता
1 आसान प्रश्न का सही उत्तर दें और टेटमोसॉल के साथ सेल्फी अपलोड करें**

100% कॉटन बेडशीट, 2 पिलो कवर के साथ

प्रतियोगिता में कैसे प्रवेश करें?

पहला कदम
यहाँ दिए गए या पैक पर दिए गए QR कोड को स्कैन करें या www.tetmosolcontest.in पर लॉग-ऑन करें

दूसरा कदम
अपनी जानकारी भरें

तीसरा कदम
1 आसान प्रश्न का सही उत्तर दें और टेटमोसॉल साबुन रैपर या डस्टिंग पाउडर के साथ सेल्फी अपलोड करें**

चौथा कदम
सभी मैचेस का सही अनुमान करें

TE/20210921-38

नियम और शर्तें: यह प्रतियोगिता 22 सितंबर से 16 अक्टूबर, 2021 तक मान्य है। यह प्रतियोगिता तमिलनाडु राज्य को छोड़कर भारत के बाकी सभी निवासियों के लिए खुली है। प्रत्येक प्रतिभागी की केवल एक ही प्रविष्टि मान्य होगी। एक मोबाइल नंबर से केवल एक ही प्रविष्टि मान्य होगी। एक से अधिक प्रविष्टि होने पर केवल पहली प्रविष्टि ही मान्य होगी। प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए पैन कार्ड विवरण साझा करना आवश्यक होगा (बेडशीट के पुरस्कार को छोड़कर)। ₹1 करोड़ का इनाम केवल एक ही प्रतियोगि को जीतने का मौका लकी ड्रॉ के द्वारा मिलेगा। **प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए प्रोडक्ट की खरीद का सबूत अनिवार्य नहीं है। अमान्य प्रविष्टियां यानी तारीख के बाद, अस्पष्ट, एक से अधिक, भ्रामक/गलत/गलत तरीके से प्रस्तुत करने वाली या/और अधूरी प्रविष्टियां स्वीकार नहीं की जाएंगी। ^टेटमोसॉल साबुन का उपयोग खुजली (स्केबीज़) कणों द्वारा हुए संक्रमण के लिए किए जाता है। टेटमोसॉल डस्टिंग पाउडर का उपयोग फंगल इन्फेक्शन के लिए किया जाता है। संक्रमण की संभावना रहने तक ही लगाए। सभी 45 मैचेस समाप्त होने के बाद 45 दिनों के भीतर विजेताओं की घोषणा हमारे सोशल मीडिया हैंडल के माध्यम से की जाएगी। अगर मान्य प्रविष्टियों की कुल संख्या कुल पुरस्कारों से कम होती है तो योग्य विजेताओं की संख्या को संशोधित या इनाम बदलने का अधिकार कंपनी के पास सुरक्षित होगा। पुरस्कारों की छवियों का उपयोग केवल प्रतिनिधि उद्देश के लिए किया गया है। किसी भी मानदंड पर कई प्रविष्टियां होने पर, विजेताओं को लकी ड्रॉ के आधार पर घोषित किए जाएंगे। आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 194बी के अनुसार टीडीएस के प्रति देयता विजेता की होगी और पुरस्कार के वितरण के बाद टीडीएस के प्रति इस तरह की देयता को विजेता से एकत्र किया जाएगा। नियम और शर्तों की जानकारी के लिए www.tetmosolcontest.in पर लॉग-ऑन करें।

मुक्ता
अक्तूबर 2021 अंक : 1001

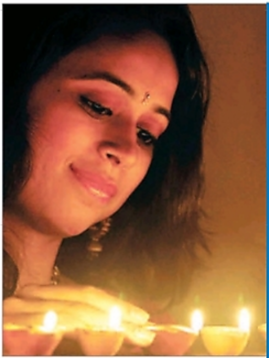

लेख

अपनों के साथ मनाएं दीवाली 4
गिफ्ट वही जो हो सही 6
बौयफ्रैंड के साथ दीवाली 18
होस्टल वाली दीवाली 22
जुए में न करें जेब खाली 26
सोचसमझ कर करें प्यार 32
समलैंगिकता : मिथक बनाम सच 36

कथा साहित्य

अब मैं समझ गई हूं 10
दोस्तियाप्पा 14
खूनी सुबूत 42

स्तंभ

मुक्त विचार 9
प्रेम समस्याएं 24

फीचर

Style of the month 30
वैब सीरीज रिव्यू : क्या देखें 34
बौलीवुड buzz 38
Small screen 46

कविता

एकदूजे के हो जाने दो 20
हम को यूं देखा न करो 20

दिल्ली प्रेस
सामाजिक क्रांति की पत्रिकाएं
संस्थापक : विश्वनाथ
(1917-2002)
33 पत्रिकाएं 10 भाषाएं

रचनाओं, स्तंभों व संपादक को पत्रों के लिए ईमेल :
editor@delhipress.biz
8527666772
निमंत्रणों प्रैस सूचनाओं के लिए ईमेल :
invities.pressrelease@delhipress.biz
ग्राहक विभाग के लिए ईमेल :
subscription@delhipress.in

संपादक व प्रकाशक : परेश नाथ

**मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय :
दिल्ली प्रैस भवन, ई-8 झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.**

अन्य कार्यालय : ● 31 ग्राउंड फ्लोर, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, **अहमदाबाद-380009. फोन : 079-26577845** ● ए-4, श्रीराम ईंडस्ट्रियल एस्टेट, जी.डी. अंबेडकर मार्ग, **वडाला-400021. फोन : 022-24122661** ● 11, फर्स्ट क्रौस, बालप्पा गार्डन, शिवाजी नगर, **बैंगलुरु-560051. फोन : 080-42013076** ● 14, पहली मंजिल, सीसंस कौंप्लैक्स, मोंटीअथ रोड, **चेन्नई-600008. फोन : 044-28554448** ● 122, पहली मंजिल चिनाय ट्रेड सैंटर, 116, पार्क लेन, **सिकंदराबाद-500003. फोन : 040-27896947, 27841596** ● जी-7 पार्वोनियर टावर्स, 1 मेरीन ड्राइव, **कोच्चि-682031. फोन : 0484-2371537.** ● 16 ए, अमृता बनर्जी रोड, पहली मंजिल, कालीघाट, नजदीक बासुश्री सिनेमा **कोलकाता-700026.** ● 12, ग्राउंड फ्लोर, अशियाना टावर्स, एग्जीबिशन रोड, **पटना-800001. फोन : 0612-2323840** ● फ्लैट नं. बी-जी/3,4 सप्रू मार्ग, **लखनऊ-226001. फोन : 05222618856** ● गीतांजली टावर, शौप नं. 114, (डाक्टर व्यास अस्पताल के सामने) अजमेर रोड, **जयपुर-302006.** ● बी-31, वर्धमान ग्रीन पार्क कालोनी 80 फुटा रोड, पीछे अशोका गार्डन थाना, **भोपाल-462023. फोन : 0755-2759853, 2573057.**

दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन पीटीई लिमिटेड की बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. मुक्ता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.

दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएस पीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा-121003 में मुद्रित.
संपादक : परेश नाथ.

वार्षिक मूल्य केवल चैक/ड्राफ्ट/मनीऔर्डर द्वारा ही 'दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड' के नाम से ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते.
Ph.: 91-41398888, Extn. No. 119,221,264
(Mon to Sat 10 am to 6 pm)
Mobile/SMS/Whatsapp: **08588843408**
Email : subscription@delhipress.in

COPYRIGHT NOTICE
© Delhi Press Patra Prakashan Private Ltd., New Delhi-110055, INDIA. No article, story, photo or any other matter can be reproduced from this magazine without written permission.

मूल्य : एक प्रति 30.00. एक/दो वर्ष : ₹360/720. विदेशों में मूल्य : एक प्रति : 0.47 (डाक व्यय अतिरिक्त)

International Subscription Price Air mail Charges		Express Delivery Europe & South America		Express Delivery SAARC Countries		Express Delivery Rest of Countries		
1 year	50	1 year	210	1 year	120	1 year	140	*(All the Prices given are in US$)*
2 year	95	2 year	420	2 year	240	2 year	275	

only books magazine

अपनों के साथ मनाएं दीवाली

त्योहार अपनों के साथ मिल कर मनाने में ही आनंद मिलता है, फिर चाहे आप कितने भी दूर क्यों न रह रहे हों. आप अपने करीबियों से त्योहार में मिलते हैं तो वे मीठे पुराने पल फिर से याद आते हैं जिन्हें आप ने कभी साथ में जिया था.

लेख • गरिमा पंकज

आज सुबहसुबह अंकित के पास मां का फोन आया. मां ने बड़े प्यार से उसे घर पर बुलाया तो अंकित चिढ़ता हुआ बोला, ''नहीं मां, मैं नहीं आ पाऊंगा. औफिस में इतना सारा काम है. वैसे ही सब संभालना मुश्किल हो रहा है. आने का प्लान बनाया तो आनेजाने में 4 दिन बरबाद हो जाएंगे.''

मां खामोश रह गई और उस ने फोन काट दिया. वह सोचने लगा एक तो दीवाली के समय काम इतना ज्यादा होता है, दूसरे, घरवाले बुलाने लगते हैं. उसे याद आया कि कैसे पिछले साल उस के पिता ने उसे बुलाने के लिए फोन किया था तब भी उस ने मना कर दिया था, मगर इस साल तो पिताजी गुजर चुके हैं, इसलिए मां ने फोन किया. तभी उसे खयाल आया कि कैसे एक साल में जिंदगी बदल जाती है.

पिताजी हर साल कितने प्यार से उसे दीवाली पर घर बुलाते थे पर अब वे हैं ही नहीं. वह अब उन से कभी मिल नहीं पाएगा. अब मां बुला रही हैं. कल को क्या जाने कहीं अचानक वे भी बुलाने के लिए न रहीं तो, अचानक यह खयाल आते

ही उस ने मन ही मन फैसला किया कि उसे जाना है.

पिताजी के जाने के बाद वह समझ चुका था कि जिंदगी बहुत छोटी होती है. अपनों के साथ जितना वक्त गुजार लो, वे ही सब से खूबसूरत लमहे होते हैं. बहन प्रिया भी शादी के लायक है. अगले साल तक शादी कर के वह अपने घर चली जाएगी. फिर वह दीवाली का त्योहार मनाने भाइयों के पास कहां आ पाएगी.

अंकित ने तुरंत अपने भाई कुशल को फोन किया जो बेंगलुरु में इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहा था. फोन कर के वह भाई से बोला, ''इस बार दीवाली में घर चलते हैं.''

''अरे नहीं भैया, मैं नहीं जा पाऊंगा. एग्जाम आने वाले हैं.''

''कुशल, मैं कह रहा हूं न, आ जा मां के लिए. मां अकेली है. तू घर आ जा, बस. मैं कुछ नहीं सुनूंगा. मैं भी जा रहा हूं.''

कुशल सहमति देता हुआ बोला, ''ठीक है भैया, मैं भी आ रहा हूं.''

दीवाली से 2 दिनों पहले जब चुपके से कुशल और अंकित दरवाजा खोल कर अंदर दाखिल हुए तो मां और छोटी बहन प्रिया खिलखिला कर हंस पड़ीं. मां ने दौड़ कर दोनों बच्चों को सीने से लगा लिया. उन की आंखों से खुशी के आंसू बह रहे थे.

वह दीवाली बहुत खूबसूरत गुजरी. मां ने तरहतरह के पकवान बनाए. अंकित प्रिया के लिए खूबसूरत सी ड्रैस ले कर आया था जिसे दीवाली के दिन पहन कर वह शहजादी लग रही थी. मां की खुशी की सीमा न थी. पति के जाने के गम में वह इतने महीने तक मुसकराई नहीं थी. मगर दीवाली के नाम पर बच्चों के एकसाथ आ जाने से उस की जिंदगी में खुशियां जैसे फिर से लौट आई थीं.

मिल कर दीवाली मनाने के फायदे

आप त्योहार का असली मजा तभी ले पाते हैं जब अपनों के साथ होते हैं. इस से किसी भी त्योहार में जो खूबसूरती और रंगत आती है वह बड़े शहरों में अकेले एक या दो कमरे के फ्लैट में सिमट कर बैठे रहने से नहीं मिल सकती. मांबाप का प्यार, मां के हाथों की मिठाइयां, पिता की प्यारीप्यारी झिड़कियां, भाईबहनों की मीठीमीठी लड़ाइयां और प्यारभरी बातें त्योहार का आनंद कई गुना बढ़ा देती हैं.

यह वो खुशी है जो और किसी भी तरह नहीं मिल सकती. भले ही आप की शादी हो जाए, बच्चे हो जाएं, आप करोड़ों कमा लें या फिर सफलता का आसमान छू लें मगर तब भी आप मांबाप, भाईबहन के साथ त्योहार मनाने की खूबसूरत यादें नहीं मिटा पाएंगे.

त्योहार एकसाथ मिल कर मनाने से प्यार बढ़ता है. आप को यह समझ आता है कि आप इन लोगों के साथ कितने प्यारे से बंधन में बंधे हुए हैं. आप का आत्मविश्वास बढ़ता है. किसी भी चीज को देखने और महसूस करने का सकारात्मक रवैया मिलता है. जैसेजैसे इंसान बड़ा होता जाता है और अपनों से दूर होता जाता है, वैसेवैसे पुरानी बातें त्योहारों के मौके पर ही याद आती हैं.

only books magazine

आप जब अपने हाथों से पूरे घर को दीपों से सजाएंगे और खूबसूरत लाइटिंग कर के अपने जगमगाते घर के साथसाथ मांबाप के मुसकराते चेहरे को देखेंगे तो उन पलों को कभी नहीं भूल सकेंगे. दीवाली के दिन अपनों को गिफ्ट्स दे कर जो खुशी मिलती है वह खुद के लिए हजारों की शौपिंग कर के भी नहीं मिलती.

दीवाली में जब आप घरवालों के साथ होते हो तो रिश्ते को एक नया ठहराव मिलता है. आपसी प्यार और विश्वास की नींव मजबूत होती है. जीवन में सही माने में नया सवेरा आता है. इसलिए जब भी मौका मिल रहा हो, इस मौके को न गंवाए. कोई नहीं जानता, आगे जिंदगी में क्या होगा, इसलिए यादगार लमहों का कारवां इकट्ठा करते जाइए.

हमेशा घरवालों के साथ ही दीवाली मनाएं. औफिस का काम ज्यादा है या एग्जाम की तैयारी करनी है तो इस में भी कोई समस्या नहीं है. आप कुछ दिनों पहले से ज्यादा मेहनत शुरू कीजिए ताकि समय आने पर जिम्मेदारी निभा कर घर के लिए निकल सकें और कोई बहाना न बनाते हुए रिलैक्स हो कर घरवालों के साथ दीवाली मना सकें. ●

DELHI PRESS MAGAZINES
गृहशोभा
अवसर के अनुरूप मेकअप टिप्स से भरपूर पत्रिका
SAVE 30%
आज ही सब्सक्राइब करें

गिफ्ट वही जो हो सही

लेख • पारुल भटनागर

त्योहार यानी अपनों के साथ खुशियोंभरा समय, जिस में हम अपनी बिजी लाइफस्टाइल में से फुरसत के कुछ पल निकाल कर अपनों के साथ बिताते हैं. उन के साथ बातें करते हैं और खूबसूरत यादें बांटते हैं. अगर इस में उपहार का तड़का लग जाए तो सोने पे सुहागा वाली बात हो जाती है. बता दें कि उपहार लेना भला किसे पसंद नहीं होता. सभी को उपहार भाते हैं. लेकिन कई बार इन उपहारों में थोड़ी स्मार्टनैस न दिखाई जाए तो खुशियों का रंग फीका पड़ सकता है. जबकि, उपहार दे कर आप अपनों के चेहरे पर एक मीठी सी मुसकान बिखेर देते हैं. चलो जानते हैं कि इस दीवाली अपनों के लिए उपहारों का चयन कैसे करें.

पसंद की चीजें दें

उपहार चेहरे पर मुसकान ला देता है, दिल को गार्डनगार्डन कर देता है. इस फैस्टिवल पर आप को अपनों को उपहार के नाम पर सिर्फ उपहार दे कर खानापूर्ति नहीं करनी है, बल्कि इस बार आप उन्हें उन की पसंद की चीजें गिफ्ट करें. जैसे बात करें मम्मीपापा को गिफ्ट देने की, तो आप कुछ समय पहले से ही बातोंबातों में उन के मन की बात जानने की कोशिश करें कि उन का क्या लेने का मन है.

अगर मम्मी को किचन के लिए कुछ खरीदने का मन है और आप को उस बात का आइडिया है तो आप उन के लिए वही खरीदें. यकीन मानें, जब आप उन्हें वे गिफ्ट देंगे तो उन के चेहरे पर जो चमक व खुशी नजर आएगी उस का आप को अंदाजा भी नहीं होगा.

ठीक उसी तरह अगर आप के पापा को कपड़ों का शौक है तो आप उन के लिए एक

इस दीवाली को बीती दीवाली से अलग मनाएं, अपने करीबियों को रूटीन गिफ्ट्स देने के बजाय ऐसे यूनीक गिफ्ट्स दें कि उन का दिल खुशी से झूम उठे.

पेट जी और दशहरे का पर्व
ANTACID LIQUID WITH BISMUTH & BELLADONNA
STOMAFIT LIQUID
KEEPS STOMACH FIT & HEALTH
STOMAFIT CHEWABLE
New Pack
HAEMOCAL Iron Tonic with Folic Acid

STOMAFIT®

लिक्विड व टैबलेट

SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

अपच व ऐसीडिटी से तुरंत आराम

सुनो जी, दशहरे का पर्व बुराई पर अच्छाई की जीत के लिए मनाते हैं। पर शरीर की बुराईयों का क्या करें।

अरी भाग्यवान, शरीर की बुराईयों की जड है पेट की बीमारीयाँ जैसे कब्ज, ऐसीडिटी, अपच इत्यादी, जिनका नाश करता है स्टोमाफिट। क्युंकि पेट फिट, तो आप फिट!!

450ML, 200ML, 100ML, 90 TABLETS

रखे स्टमक फिट, पेट फिट, आप फिट!!

HAEMOCAL®

Delicious Taste

ग्लूकोज़ से भरपूर आयरन टॉनिक

क्रोध, कपट, कटुता, कलह, चुगली या अत्याचार !
दगा, द्वेश, अन्याय या छल ये थे दशानन के हथियार !!
वर्तमान का हथियार है, शरीर में कमजोरी रहना लगातार !
आओ हेमोकॉल के साथ करें इस दशानन पर प्रहार !!

आपको और आपके परिवार को
दशहरे
की हार्दिक शुभकामनाएं

शहद सा गाढ़ा
संतरे सा स्वाष्टि

300ML, 450ML

HAEMOCAL-Z जिंक के साथ उपलब्ध(450ml)

हेमोकॉल खरीदने के लिए स्कैन करें

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:
सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.
फोन:8447977889/999, 011-46108735, मेल:info@stomafit.com
सभी प्रमुख ऑनलाईन फार्मेसीयों पर उपल्बध

स्टोमाफिट खरीदने के लिए स्कैन करें

साइज ऊपर के कपड़े खरीदें. कोशिश करें उन के लिए औनलाइन शौपिंग करने की क्योंकि उस में रिटर्न करने में काफी आसानी होती है. मतलब जिस के लिए भी गिफ्ट खरीदें, उस की पसंद का ध्यान जरूर रखें. वरना चेहरे की मुसकान फीकी पड़ने में देर न लगेगी.

▼ सेहतभरे उपहार दें

उपहारों और खुशियों का आदानप्रदान ही है दीवाली का त्योहार. लेकिन कोरोना महामारी के कारण समय ऐसा चल रहा है कि हर कोई अपनी हैल्थ का खासतौर पर ध्यान रख रहा है और ऐसे में अगर आप इस दीवाली अपनों को मिठाई का उपहार देना चाहते हैं तो अपना इरादा बदल दें. मिठाइयां आप के अपनों को बीमार कर सकती हैं. त्योहार के समय में मिठाइयों में मिलावट का धंधा जोरों पर होता है. ऐसे में आप अपनों को ड्राईफ्रूट्स, ग्रेन, बिस्कुट पैक्स, हैल्दी जूस, सूप पैक्स जैसे सेहतभरे उपहार दें. ये पैक्स अट्रैक्टिव लगने के साथसाथ सेहत का भी ध्यान रखने का काम करेंगे.

▼ गिफ्ट वाउचर भी अच्छा औप्शन

अभी तक आप त्योहारों पर अपनी पसंद के गिफ्ट्स अपनों को देते ही आए हैं. लेकिन इस दीवाली थोड़ा हट कर सोचें. इसलिए इस बार आप अपनों को गिफ्ट नहीं, बल्कि गिफ्ट वाउचर दें, जिसे आप औनलाइन आसानी से खरीद सकते हैं. जिसे आप इस वाउचर को दे रहे हैं, उन के नाम का मैसेज भी उस में ड्रौप कर सकते हैं. बहुत ही यूनीक आइडिया है.

▼ बच्चों को दें क्रिएटिव चीजें

अगर इस दीवाली आप अपने घर के बच्चों के लिए गिफ्ट ले जाने को सोच रहे हैं तो उन्हें प्लास्टिक के टौयज या अन्य खिलौने देने के बजाय कुछ सीखने वाली चीजें दें. जैसे, आप उन्हें साइंस से जुड़े हुए कुछ मौडल बनाने वाले टौयज दे सकते हैं, उन के कोर्स से जुड़ी हुई कुछ काम की किताबें या फिर ऐसे गेम्स जो उन्हें खेलखेल में मजे के साथ लर्न करना भी सिखाएं. इस से उन्हें उपहार भी मिल जाएगा और इस बहाने वे कुछ काम की चीजें भी सीख जाएंगे.

▼ जब कुछ न समझ आए

अगर आप समझ नहीं पा रहे हैं कि आप इस त्योहार अपने घर गिफ्ट में क्या ले कर जाएं तो आप को हम एक बैस्ट औप्शन बताते हैं, जो हमेशा हर घर की जरूरत में शामिल रहता है. जी हां, हम बात कर रहे हैं बैडशीट की, जो हर मौम या फिर आप जिन्हें भी इसे देंगे, इसे जरूर इस्तेमाल करेंगे और इस गिफ्ट को पा कर वे अपनी खुशी का इजहार न करें, ऐसा हो ही नहीं सकता. कोशिश करें जब भी आप बैडशीट का चयन करें तो साइज बड़ा ही चुनें, क्योंकि अगर आप कई लोगों के लिए ले रहे हैं तो पता नहीं किस के बैड का साइज क्या है. इसलिए, बड़ा साइज चुनने में ही समझदारी है. यकीन मानिए, यह गिफ्ट हर किसी को पसंद आएगा.

▼ एक्सपायरी जरूर देखें

आप अगर त्योहार पर घर में गिफ्ट के साथ खानेपीने की चीजें ले जाने के बारे में सोच रहे हैं तो कुछ बातों का ध्यान रख कर ही खरीदें. जैसे, प्रोडक्ट्स की एक्सपायरी जरूर चैक करें, पैकेट कहीं से फटा तो नहीं है, इस बात का ध्यान जरूर रखें. मिठाइयां खरीदने से बचें और अगर खरीद भी रहे हैं तो ज्यादा चाशनी वाली व खोए वाली मिठाई खरीदने से बचें क्योंकि चाशनी वाली मिठाई से आप का बैग खराब होने का डर बना रहता है वहीं त्योहारों पर खोए वाली मिठाई में सब से ज्यादा मिलावट के चांसेस रहते हैं, जो अपनों की हैल्थ को खराब कर सकती है. इसलिए आप इस की जगह अच्छी व ब्रैंडेड दुकान से नमकीन, बिस्कुट, ड्राईफ्रूट्स, टौफी के पैकेट खरीद लें. ये त्योहारों पर बहुत काम के साबित होते हैं.

▼ होम लाइट्स भी अच्छा गिफ्ट

दीवाली पर हर किसी को अपने घर को सजाने का दिल करता है. ऐसे में इस त्योहार अगर आप अपने घर जा रहे हैं तो आप घर को सजाने के लिए मार्केट में मिलने वाली अच्छी लाइट्स जैसा गिफ्ट भी अपनों को दे कर उन के चेहरे पर मुसकान ला सकते हैं. इस के लिए आप आजकल डिमांड में चल रहे एलईडी लाइट्स या बल्ब्स के औप्शन को भी चूज कर सकते हैं. यकीन मानिए, इन लाइट्स से जब आप का घर चमकेगा तो आप के अपनों के चेहरे पर खूब खुशी नजर आएगी. तब आप को समझ आएगा कि शायद इस गिफ्ट से बेहतर और कोई गिफ्ट हो ही नहीं सकता था.

▼ कपड़ों का सलेक्शन ध्यान से

त्योहार मतलब अच्छा खानापीना, लोगों का एकदूसरे के घर आनाजाना व नए कपड़े पहनना व एकदूसरे के साथ खूब खुशियोंभरे पल बांटना. ऐसे में अगर आप अपनों के लिए कपड़े ले जाने की सोच रहे हैं तो थोड़ा समझदारी से काम लें. अगर ले जाना है तो एक साइज बड़े कपड़े खरीदें या फिर इस संबंध में किसी अपने की सलाह लें ताकि आप को सही साइज की गाइडेंस मिलने के साथ सलैक्शन में आसानी हो. हमेशा ट्रैंड में चल रहे कपड़े ही खरीदें, और जितना संभव हो अपने आसपास या नजदीकी मार्केट से ही खरीदें और साथ ही, रिटर्न पौलिसी के बारे में भी जरूर पूछ लें ताकि बदलने में आसानी हो.

▼ फोटो फ्रेम दें उपहार में

जरूरी नहीं कि दीवाली पर कपड़े या फिर मिठाई ही उपहार के रूप में दी जाएं, आप थोड़ा क्रिएटिव सोचते हुए इस बार अपनों के यादगार पलों को मनचाहे फोटो फ्रेम में कैद कर के अपनों को ये शानदार गिफ्ट दे सकते हैं. जब भी उन की नजर आप के इस गिफ्ट पर जाएगी तो वे उन्हें आप की याद दिलवाने के साथसाथ आप के इस गिफ्ट की तारीफ करने को मजबूर जरूर करेंगे तो थोड़ा यूनीक सोचिए इस बार.

▼ बजट का भी ध्यान रखें

चाहे बात हो औनलाइन की या औफलाइन की, जब भी आप कुछ खरीदें तो बजट का ध्यान जरूर रखें. साइट्स पर कंपेयर कर के ही खरीदें. कोशिश करें कि बिलकुल आखिरी समय पर न खरीदें, क्योंकि इस से आप का बजट गड़बड़ा सकता है. पहले से ही प्लान कर लें कि घर में किस के लिए क्या खरीदना है. इस से आप को चीजों को सलैक्ट करने में आसानी होगी. इस तरह आप दीवाली पर अपनों को जरूरत के हिसाब से व पसंद के गिफ्ट्स दे कर उन के चेहरे पर मुसकान ला सकते हैं. ●

मुक्त विचार

संपादकीय

उभरते युवा राजनेता

कांग्रेस ने गाजेबाजे के साथ 2–3 युवा नेताओं को अपनी बुढ़ाती पार्टी में शामिल किया है. हार्दिक पटेल के साथ कांग्रेस में अब कन्हैया कुमार और जिग्नेश मेवानी भी हैं. इन तीनों युवा नेताओं ने पिछले 5–7 सालों में धूम मचाई है. हार्दिक और जिग्नेश गुजरात से हैं जबकि कन्हैया बिहार से. कन्हैया ने नाम दिल्ली में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की स्टूडैंट्स यूनियन के प्रैसिडैंट बनने के बाद कमाया. भाजपाई सरकार ने बिना कारण उन्हें दिल्ली की जेल तक में रखा. हार्दिक को भी भाजपा के कोप का निशाना बनना पड़ा और जेलों में रहना पड़ा.

कांग्रेस के अलावा किसी और पार्टी ने हाल में अपनी पार्टी में युवा नेताओं को शामिल नहीं किया. राष्ट्रीय जनता दल और लोकजनशक्ति पार्टी के तेजस्वी यादव और चिराग पासवान केवल अपने पिताओं, लालू प्रसाद यादव व रामनिवास पासवान की जगह आए हैं.

वरना भारतीय जनता पार्टी से ले कर कम्युनिस्ट पार्टी तक सब युवाओं का इस्तेमाल केवल दंगे करने/कराने में करती हैं. भारतीय जनता पार्टी ने इन की फौज सी तैयार की है जिन के दिमाग में गाय का गोबर भर दिया है, जो सिर्फ और सिर्फ भगवा झंडे के सहारे सिर फोड़ने का काम कर रहे हैं. ये युवा मंदिरों के आगे लड़कियों की लाइनें लगवाते हैं. कहीं लड़केलड़की गलबहियां डाले मिल जाएं तो उन्हें लूटते हैं. मुसलमानों के साथ गालीगलौच करते हैं, मंदिरों के नाम पर चंदा वसूलते हैं. जबकि, पार्टी की नीतियों को तय करने में तो इन की पूछ भी नहीं होती और उन्हें रोजगार के नाम पर सिर्फ सोशल मीडिया पर गंद फैलाने का काम मिलता है.

कांग्रेस ने शोर मचा कर इन युवा नेताओं को शामिल किया है तो कांग्रेस की पुरानी पीढ़ी की चूं बोल रही है. सोनिया, राहुल और प्रियंका की विरासत का लाभ उठा कर चुनाव जीते ये बूढ़े नेता अपनी जमीन खिसकती देख सकते हैं. इन के बच्चे अधिकतर विदेशों में हैं या सत्ता के दिनों में हो गई पिता की कमाई का सुख भोग रहे हैं.

युवा नेता हर समाज के लिए जरूरी हैं. यह अफसोस है कि जैसेजैसे लोग देर तक हैल्दी रह रहे हैं, उन के बच्चे अपनी जगह बनाने में मुश्किल महसूस कर रहे हैं. नेताओं के बेटेबेटियों को राजनीति में नहीं, बाहर जाना पड़ रहा है. वे उस आराम के आदी हो गए हैं जो राजनीति में नहीं चलता. राजनीति में हर गांवकसबे की धूल छाननी होती है. भारत के गांवों और शहरों का रहनसहन अब जमीनआसमान के फर्क का है. कांग्रेस सिर्फ नाम को इन युवा नेताओं को लाई है या ये अपनी जगह बना लेंगे, देखना है.

only books magazine

प्रेम पर पहरा

देश के कई राज्यों में हिंदूमुसलिम प्रेम पर रोकटोक लग गई है. प्रेम अब जाति को देख कर करो, जल्दी ही ऐसा कानून भी बन जाए, तो बड़ी बात नहीं है. घर के बड़ेबूढ़े तो इस कानून को पूरी कोशिश के साथ लागू करते हैं कि जो दिखे उस से प्रेम कर लो, यह इस देश में नहीं चलता. यहां तो मातापिता और उन के पंडे द्वारा तय ही शादी हो सकती है.

प्रेम के सैकड़ों पौधे घरेलू जातिवादी सोच के जहर से हर रोज उखाड़े जाते हैं. प्रेम के रूप में कितना गम युवा दिलों को होता है, इस से बेखबर मातापिता अपने को हिंदू धर्म को बनाए रखने की ड्यूटी पर मान कर प्राउड फील करते रहते हैं.

धर्मांतरण कानून और जनसंख्या कानून के नाम पर भारतीय जनता पार्टी की केंद्रीय सरकार देशभर, खासतौर पर उन राज्यों में जहां उस की सरकारें हैं, में युवा दिलों और युवा शरीर पर कंट्रोल करने की पूरी कोशिश में लगी है. अगर आज भारत के युवा देश से बाहर जाने को छटपटा रहे हैं तो इसीलिए कि वे अपने मातापिता व उन के पंडों की बनाई काली दीवारों से फ्रीडम चाहते हैं.

जो बाहर नहीं जा पा रहे, वे मोबाइल गेम्स या फेसबुक और व्हाट्सऐप की शरण में छिप रहे हैं. घर के मैंटल प्रैशर का जवाब उन के पास केवल मोबाइल में रह गया. अगर बेरोजगारी के खिलाफ देशभर में हल्ला नहीं मच रहा है तो इसलिए कि युवाओं के मन को तो पहले ही मार दिया गया है और उन्होंने अपने को हवा के सहारे बह जाने को तैयार कर लिया है. वे न पहाड़ों को काट सकते हैं, न समुद्र को चीर सकते हैं. वे घर में रहते हुए भी घरवालों से दूर हैं, सड़क पर चलते हुए भी कान में लगे ईयरफोन की सुन रहे हैं. वे दस जनों के बीच में भी चुप बैठे रहते हैं. युवाओं का हल्ला करना अब बंद सा हो गया है.

किसान आंदोलन को ही देख लें. उस की तसवीरें साफ कर रही हैं कि सफेद दाढ़ियों और बालों वाले अपनी जमीन व रोजगार बचाने के लिए मौत से लड़ रहे हैं और उन के बच्चे शायद नशे में धुत हो कर कोई रैप म्यूजिक सुन रहे हैं. यह सब उस नीति का नतीजा है जिस में यूथ की फ्रीडम छीन कर उन्हें हिंदू धर्म की रक्षा करने का मंत्र पकड़ा दिया गया जिस में उन का मन, विवेक, सूझबूझ कैद हो गया है. जब वे प्रेम तक अपनी मरजी से नहीं कर सकते, किसी के साथ मनचाहे तरीके से रात नहीं बिता सकते तो इस जवानी का क्या नाम?

पिछले 200–300 सालों में दुनिया ने जो तरक्की देखी है उस की वजह धर्म और सत्ता की टूटती जंजीरें रही हैं. पश्चिम में विचारकों ने नई हवा दी, भारत में गांधी ने युवाओं को कांग्रेस में शामिल कर के नया रास्ता दिखाया, चीन में माओ ने पुराने कल्चर को नदियों में बहा दिया. पश्चिम ने इस रेवोल्यूशन का पूरा लाभ उठाया, चीन ने माओ के जाने के बाद उठाया और भारत ने इन युवाओं के गले में फिर पट्टी बांध दी और जो चमक पैदा हुई थी वह बुझ गई.

अब प्रेम और विवाह पर बंदिशें लगा कर बचीखुची कसर भी नहीं छोड़ी जा रही. ●

अब मैं समझ गई हूं

कहानी • प्रतिभा अग्निहोत्री

विवाह किसी कुंडलीवुंडली से नहीं, बल्कि दो लोगों की परस्पर समझदारी से सफल और असफल होते हैं. बातबात में अपनी आधुनिकता का प्रदर्शन करने वाले रिमू के परिवार का इतना अंधविश्वासी होना अमन के लिए किसी आश्चर्य से कम न था. एक दिन तो...

आज हमारे विवाह की 5वीं वर्षगांठ थी. वैवाहिक जीवन के ये 10 वर्ष मेरे लिए किसी चुनौती से कम न थे क्योंकि इन सालों में अपने वैवाहिक जीवन को सफल बनाने के लिए मैं ने कसर नहीं छोड़ी थी. खुशी इस बात की भी थी कि मैं अपनी पत्नी को भी अपने रंग में ढालने में सफल हो गया था.

इन चंद वर्षों में मैं यह भी समझ गया था

कि बचपन में बच्चों को दिए गए संस्कारों को बदलना कितना मुशकिल होता है. आप को बता दूं कि रिमू यानी मेरी पत्नी रीमा मेरी बचपन की मित्र थी. उस से विवाह होना मेरे लिए बहुत बड़ी खुशी की बात थी. जिस से आप प्यार करते हो उसी को अपनी पत्नी के रूप में प्राप्त करना जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि तो कहा ही जा सकता है.

रीमा मेरा पहला प्यार थी. जब हम एकदूसरे को टूट कर चाहने लगे थे तब हमें स्वयं ही पता नहीं था कि हमारे प्यार का भविष्य क्या होगा परंतु फिर भी चांदनी रात के दूधिया उजाले में एकदूसरे का हाथ थामे हम दोनों घंटों बैठे रहते थे. रीमा की कोयल स्वरूप मधुर वाणी से झरते हुए शब्दरूपी फूलों जैसी उस की बातें मेरा मन मोह लेती थीं.

तब मैं ग्रेजुएशन कर रहा था, जब रीमा का परिवार हमारे पड़ोस में रहने आया था. उस का घर मेरे घर से 10 कदम की दूरी पर ही था. उस दिन मैं जब कालेज से लौटा तो अपने घर से कुछ दूरी पर सामान से लदा ट्रक खड़ा देख कर चौंक गया था. तेज कदमों से अंदर जा कर मां से पूछा, ''मां, यह सामान किस का है? कौन आया है रहने?''

''मुझे क्या पता किस का है? तू भी फालतू की बातों में अपना दिमाग खराब मत कर, खाना तैयार है चुपचाप खा ले.''

कह कर मां अपने काम में व्यस्त हो गई. पर मेरा मन तो न जाने क्यों उस ट्रक में ही उलझा था. सो, मैं अपने कमरे की खिड़की से झांकने लगा. तभी वहां एक कार आ कर रुकी और उस में से पतिपत्नी और 2 बेटियां उतरी थीं. बड़ी बेटी लगभग 20 और छोटी 15 वर्ष की रही होगी.

गोरीचिट्टी, लंबी उस कमसिन नवयुवती को देख कर मैं ने मन ही मन कहा, 'लगता है कुदरत ने इसे बड़ी ही फुरसत में बनाया है. क्या बला की खूबसूरती पाई है.'

उस के बारे में सोच कर ही मेरा मन सौसौ फुट ऊपर की छलांग लगाने लगा था. उस के बाद तो मेरा युवामन न पढ़ने में लगता और न ही अन्य किसी काम में. खैर, जिंदगी तो जीनी ही थी. अब मैं अकसर अपने कमरे की उस खिड़की पर बैठने लगा था, बस, उस की एक झलक पाने के लिए. कभी तो झलक मिल जाती थी पर कभी पूरे दिन में एक बार भी नहीं.

लगभग एक माह बाद जब मैं अपने कालेज की लाइब्रेरी से बाहर आ रहा था तो अचानक लाइब्रेरी के अंदर आते उसे देखा. बस, लगा मानो जीवन सफल हो गया. सहसा अपनी आंखों पर विश्वास ही नहीं हुआ. एक बार फिर उसे घूर कर देखा और आश्वस्त होते ही मैं ने वापस अपने कदम लाइब्रेरी की ओर मोड़ दिए थे. अंदर जा कर उस की बगल की सीट पर बैठ गया था. कुछ देर तक अगलबगल झांकने के बाद मैं ने अपना हाथ उस की ओर बढ़ा दिया था.

''हैलो, माईसैल्फ अमन जैन, स्टूडैंट औफ बीएससी थर्ड ईयर.''

''हैलो, आई एम रीमा गुप्ता, स्टूडैंट औफ बीएस फर्स्ट ईयर. अभी कल ही मेरा एडमिशन हुआ है.''

उस ने मुझे अपना परिचय देते सकुचाते हुए कहा था, ''पापा के ट्रांसफर के कारण मेरा एडमिशन कुछ लेट हुआ है. क्या आप नोट्स वगैरह बनाने में मेरी कुछ मदद कर देंगे?''

''व्हाई नौट, एनीटाइम. वैसे मेरा घर तुम्हारे घर के नजदीक ही है,'' मैं ने दो कदम आगे रह कर कहा था और इस तरह हमारी प्रथम मुलाकात हुई थी.

नोट्स के आदानप्रदान के साथ ही हम कब एकदूसरे को दिल दे बैठे थे, हमें ही पता नहीं चला था. ग्रेजुएशन के बाद मैं राज्य प्रशासनिक सेवा की तैयारी करने लगा था और वह पोस्ट ग्रेजुएशन की. उस से मिलना तपती धूप में एसी की ठंडी हवा का एहसास कराता था.

2 वर्ष की कड़ी मेहनत के बाद मेरा चयन जिला खाद्य अधिकारी के पद के लिए हो गया था. जिस दिन मुझे अपने चयन की सूचना मिली, मैं बहुत खुश था और शाम का इंतजार था क्योंकि हम दोनों पास के पार्क में लगभग रोज ही मिलते थे.

उस दिन भी मैं नियत समय पर पहुंच गया था. पर आज मेरी रिमू नहीं आई थी. लगभग एक घंटे तक इंतजार करने के बाद मैं मायूस हो उठा और वापस जाने के लिए कदम बढ़ाए ही थे कि अचानक सामने से मुझे वह आती दिखाई दी.

''अरे आज इतनी लेट क्यों? और यह मेरा गुलाब मुरझाया हुआ क्यों है?'' मेरे इतना कहते ही वह मुझ से लिपट गई थी.

''अमन, हम अब इतने आगे आ गए हैं कि अब तुम्हारे बिना जीना मुश्किल है. मेरे घर वाले शादी की बातें कर रहे हैं. क्या तुम मुझे अपनाओगे?'' रिमू ने बिना किसी लागलपेट के मेरे सामने शादी का प्रस्ताव रख दिया था और मैं हतप्रभ सा उसे देखता ही रह गया था.

''हांहां, क्यों नहीं, मैं कब तुम्हारे बिना रह पाऊंगा,'' कह कर मैं ने उसे अपने सीने से लगा लिया था.

उस के बाद मेरा सर्विस जौइन करना और रिमू के पापा का ट्रांसफर पास के ही शहर में होना, सबकुछ इतनी जल्दी में हुआ कि कुछ सोचनेविचारने का समय ही नहीं मिला. मैं और रिमू फोन के माध्यम से एकदूसरे से टच में अवश्य थे. मैं ने भी अपनी पत्नी के रूप में सिर्फ रिमू की ही कल्पना की थी.

नौकरी जौइन करने के बाद जब पहली बार मैं घर आया तो मां ने मेरे विवाह की बात की. मैं अपनी मां से प्रारंभ से ही प्रत्येक बात शेयर करता रहा था, सो मां से अपने दिल की बात कह डाली.

‘‘मां, मैं और किसी से विवाह नहीं कर पाऊंगा और जो भी करूंगा आप की अनुमति से ही करूंगा.’’

‘‘कौन लोग हैं वे और क्या करते हैं. किस जाति और धर्म के हैं?’’ मां ने कुछ अनमने से स्वर में पूछा था.

जब मैं ने उन्हें अपने पड़ोसी की याद दिलाई तो वे बोलीं, ‘‘अच्छा, वह गुप्ता परिवार की बात कर रहे हो. तुम उन की बड़ी बेटी को... मैं ने देखा है क्या... उस के परिवार वाले तैयार हैं?’’

‘‘अपने परिवार वालों को रिमू स्वयं संभालेगी मां. आप तो अपनी बात कीजिए.’’

‘‘तुम्हें तो पता है कि तुम्हारे पापा और मेरे लिए केवल तुम्हारी पसंद ही माने रखती है. इस के अलावा और कुछ नहीं. हमें तुम पर पूरा भरोसा है कि तुम्हारा चयन गलत नहीं होगा?’’ मां की बातें सुन कर मैं प्यार से अभिभूत हो उन के गले लग गया था.

अगले दिन सुबहसुबह ही मेरे सपनों की रानी रिमू का फोन आ गया. उस ने जो कहा उस से मेरी खुशी दोगुनी हो गई,

‘‘अमन, मैं ने मां को अपने बारे में बताया था तो उन्होंने कुंडली मिलान की बात की है. और कहा है कि तुम अपनी जन्मपत्रिका का फोटो व्हाट्सऐप पर भेज दो. वे कल ही हमारे पंडितजी के पास जा कर मिलवा लाएंगी. बस, फिर हमारी शादी,’’ कहतेकहते रीमा फोन पर ही शरमा गई.

रिमू की बात सुन कर मैं भी कुछ आश्वस्त सा हो गया कि कुछ गुण तो मिल ही जाएंगे अर्थात अब हमारे विवाह में कोई व्यवधान नहीं था. मन ही मन मैं अपने और रिमू के सुनहरे भविष्य के सुनहरे सपने बुनने लगा.

2–3 दिन यों ही खयालों में निकल गए. एक दिन जब मैं शाम को औफिस से निकल रहा था तो रिमू का फोन आया. वह फोन पर जोरजोर से रो रही थी. मैं उस का रोना सुन कर घबरा सा गया और बोला, ‘‘क्या हुआ, कुछ बताओगी भी, क्यों इतनी जोरजोर से रो रही हो?’’

‘‘अमन, कल मां गई थीं हमारे पंडितजी से कुंडली मिलवाने. पर उन्होंने कहा है कि दोनों की कुंडली में लेशमात्र भी मिलान नहीं है. इन दोनों का विवाह किसी भी हालत में संभव नहीं है और यदि किया गया तो लड़की का वैधव्य सुनिश्चित है. इसलिए मांपिताजी ने इस विवाह के लिए साफ मना कर दिया है. अब क्या होगा?’’ कह कर फिर वह जोर से रोने लगी और फोन काट दिया.

रिमू के मातापिता की ऐसी रूढ़िवादी सोच ने मुझे हैरत में डाल दिया क्योंकि स्वयं को अति आधुनिक बताने वाला परिवार इतना अंधविश्वासी और दकियानूसी हो सकता है, यह तो मैं ने सपने में भी नहीं सोचा था.

रिमू का भाई यूएस से एमबीए कर रहा था. पूरा परिवार प्रतिदिन अपने बेटे से स्काइप पर बातचीत करता था. घर के प्रत्येक सदस्य के पास अपना अलग लैपटौप और आधुनिक तकनीक के समस्त साधन मौजूद थे. घर की एकएक वस्तु आधुनिकता का बखान करती सी प्रतीत होती थी.

बातबात में अपनी आधुनिकता का प्रदर्शन करने वाले परिवार का इतना अंधविश्वासी होना मेरे लिए किसी आश्चर्य से कम नहीं था. जन्मपत्रिका और कुंडली को इतना अधिक महत्त्व देने वाले ये तथाकथित आधुनिक परिवेश के जनमानस क्यों नहीं समझ पाते कि विवाह किसी कुंडलीवुंडली से नहीं, बल्कि 2 लोगों की परस्पर समझदारी से सफल और असफल होते हैं.

क्या जन्मकुंडली में सभी गुण मिला कर किए विवाह असफल नहीं होते, जबकि वास्तविकता तो यह है कि विवाह की सफलता और असफलता तो पतिपत्नी की परस्पर समझ, त्याग और समर्पण की भावना पर निर्भर करता है.

खैर, इस समय तो मुझे अपनी इस समस्या का ही कोई उपाय तलाशना था, सो शांतमन से किसी हल पर विचार करने लगा. इस के बाद दोएक अवसरों पर मैं ने स्वयं रिमू के मातापिता को कुंडली की निरर्थकता के बारे में समझाने का काफी प्रयास किया परंतु उन का एक ही जवाब था.

‘‘हम जानबूझ कर अपनी बेटी को विधवा होते नहीं देख सकते.’’

उन से बात कर के मुझे भी समझ आ गया था कि उन के मन में कुंडली के बीजों की पैठ बहुत गहरी है. सो, उन के आगे बोलना भैंस के आगे बीन बजाने जैसा है. कुछ दिनों बाद मुझे अपने एक मित्र के विवाह में भोपाल जाना पड़ा. मित्र ने बिना किसी तामझाम के कोर्ट में रजिस्टर्ड मैरिज की थी, जिस में महज उस के परिवार वाले ही शामिल थे.

लड़की के मातापिता ही नदारद थे. पूछने पर पता चला कि लड़की के मातापिता किसी भी स्थिति में इस अंतर्जातीय विवाह के लिए तैयार नहीं थे, इसलिए दोनों ने बिना मातापिता के ही रजिस्टर्ड विवाह करने का फैसला लिया था.

वापस आते समय मैं भी रजिस्टर्ड विवाह के बारे में सोचने लगा कि अब शायद मेरे लिए भी यही चारा है क्योंकि आज 2 वर्ष हो गए पर रिमू के मातापिता सबकुछ सहीसलामत होते हुए भी कुंडली के साथ समझौता करने को तैयार नहीं थे. न जाने कैसे और क्यों उन के मस्तिष्क में इस जन्मकुंडली ने भी सर्प की भांति की कुंडली मार ली थी.

एक दिन बातों ही बातों में मैं ने फोन पर रिमू से मातापिता की अनुमति के बगैर रजिस्टर्ड विवाह करने की बात कही. इस पर रिमू बोली, ‘‘अमन, विवाह के बाद अगर कुछ ऐसावैसा हो गया तो क्योंकि पंडितजी ने कहा है...’’

‘‘कुछ नहीं होता रिमू, मैं ऐसे किसी भी अंधविश्वास में विश्वास नहीं करता. मैं ने ऐसे कितने ही जोड़े देखे हैं जो पूरी तरह कुंडली मिलने के बाद भी ताउम्र लड़तेझगड़ते और एकदूसरे से असंतुष्ट ही रहते हैं. और मेरे ही परिचित कितने ऐसे जोड़े हैं जो अंतर्जातीय विवाह कर के भी आज खुशहाल जीवन जी रहे हैं.

‘‘हम दोनों मिल कर अपने गृहस्थ जीवन को खूबसूरत बनाएंगे. क्या तुम मांपापा को छोड़ कर मेरी खातिर आ सकती हो? कहते हैं न युवावस्था का प्यार अंधा होता है जिस में सिर्फ और सिर्फ प्यार को पाने की चाहत होती है. सो, सुनिश्चित दिन पर रीमा अपने मातापिता की अनुमति के बगैर घर से आ गई और मेरे मातापिता की मौजूदगी में मैं ने रिमू से कोर्ट मैरिज कर ली.

हमारे विवाह के बाद रिमू के मातापिता ने प्रारंभ में तो कुछ नाराजगी प्रदर्शित की परंतु बाद में धीरेधीरे सब सामान्य हो गया. विवाह के बाद रिमू को ले कर मैं अपने पोस्टिंग स्थल रीवां आ गया था. कुछ शादी की व्यस्तता और मौसम के बदलाव ने ऐसा असर दिखाया कि आते ही मैं चिकनगुनिया नामक बीमारी से ग्रस्त हो कर एक माह तक बिस्तर पर ही रहा.

एक दिन रीमा मेरे पास आ कर बैठी और मेरा हाथ अपने हाथ में ले कर बोली, ‘‘अमन, मुझे लगता है हमारी बेमेल कुंडली ने अपना असर दिखाना शुरू कर दिया है.’’

‘‘तुम्हारा दिमाग खराब है, मैं तुम से बारबार कहता हूं इस प्रकार का कोई वहम अपने मन में मत पालो. ये सब बेकार की बातें हैं,’’ कह कर मैं ने रीमा को चुप करा दिया.

मुझे पूरी तरह ठीक होतेहोते ही लगभग 6 माह लग गए. सबकुछ सामान्य हुए अभी कुछ ही दिन हुए थे कि एक दिन अचानक मेरे बड़े भाई को हार्टअटैक हो गया और जब तक उन्हें अस्पताल ले जाया गया, उन्होंने दम तोड़ दिया. अब तो रीमा के अंधविश्वासी मन का वहम और भी मजबूत हो गया. जब हम लोग

भैया का क्रियाक्रम कर के वापस आ रहे थे तो रीमा कहने लगी.

''अमन, तुम मानो या न मानो, हमारे बड़ेबुजुर्ग जन्मकुंडली मिला कर विवाह करने की बात सही ही कहते थे. देखो, हम अपने विवाह के बाद चैन से रह तक नहीं पा रहे हैं. एक के बाद एक विपत्तियां आए ही जा रही हैं. गृहस्थ जीवन को तो हम महसूस तक नहीं कर पाए.''

''तो फिर क्यों तुम चली आईं अपने मातापिता को छोड़ कर मेरे साथ. जिस से जन्मकुंडली मिलती उसी से शादी करतीं.''

रिमू की बेबुनियादी बातें सुन कर मैं लगभग झुंझला सा गया था. वास्तव में इस प्रकार की बातों को ले कर कई बार हम दोनों में बहस हो जाया करती थी. मेरा क्रोध देख कर वह शांत तो हो गई परंतु ऐसा लग रहा था मानो उस के मन में कोई अंतर्द्वंद्व चल रहा है.

एक दिन जैसे ही मैं औफिस से लौटा, रिमू बड़ी मस्ती में गुनगुनाती हुई खाना बना रही थी. आमतौर पर हैरानपरेशान रहने वाली रिमू को इतना खुश देख कर मैं हैरान था, सो पूछा, ''क्या बात है, बड़ी खुश नजर आ रही हो?''

''आज मम्मी आ रही हैं कुछ दिनों के लिए मेरे पास रहने.''

''तब तो तुम मांबेटी की ही तूती बोलेगी आज से इस घर में, मैं बेचारा एक कोने में पड़ा रहूंगा.''

''ऐसा क्यों कहते हो, मेरी मां क्या तुम्हारी मां नहीं है,'' हलकी सी नाराजगी जताते हुए रिमू ने कहा.

''अरे नहीं बाबा, मैं तो ऐसे ही मजाक कर रहा था. तुम चायनाश्ता लगाओ, मैं फ्रैश हो कर आता हूं,'' कह कर मैं चेंज करने चला गया.

2 दिनों बाद रीमा की मां हमारे घर आ गईं. यह कहने में अवश्य अजीब लगेगा परंतु सचाई यही थी कि 60 की उम्र में भी उन्होंने अपनेआप को बहुत फिट रखा था, जिस से वे रीमा की मां कम, बड़ी बहन अधिक लगती थीं. एक से एक आधुनिक परिधान धारण करती थीं वे.

आते ही उन्होंने रीमा को अपना लाइफस्टाइल बदलने और हैल्दी डाइट प्लान बनाने को कहा ताकि उस के दिन पर दिन बढ़ते कमर के घेरे को कम किया जा सके. घर के बदलते रंगढंग को देख कर मैं भी बड़ा खुश था. पर एक दिन जब सुबह मैं औफिस जाने को तैयार हो रहा था तो मांबेटी को एकसाथ तैयार हो कर जाते देख पूछ लिया.

''अरे, इतनी सुबहसुबह कहां जा रही हैं आप दोनों, चलिए कहां जाना है, मैं छोड़ देता हूं?''

''कहीं नहीं बेटा, यहीं पास के ही मंदिर में जा रहे हैं. पैदल जाएंगे तो वौक भी हो जाएगी. आप औफिस जाइए,'' सासुमां ने कहा तो मैं आश्वस्त हो कर औफिस रवाना हो गया.

इन दिनों पहले की अपेक्षा रिमू कुछ अधिक शांत और खुश नजर आने लगी थी. मैं इसे मां के आने की खुशी समझ रहा था. कुछ दिनों के बाद मुझे औफिस के काम से ग्वालियर जाना पड़ा. मेरा काम एक दिन पूर्व ही समाप्त हो गया. सो, मैं एक दिन पूर्व ही घर आ गया. जैसे ही घर के द्वार पर पहुंचा तो घर से पंडितों के मंत्रोच्चार की ध्वनि आ रही थी. अंदर जा कर देखा तो रिमू और उस की मां 4 पंडितों से घिरी हवन करवा रही थीं. क्रोध से मेरी आंखें ज्वाला बरसाने लगीं, परंतु मौके की नजाकत को समझ कर मैं शांत रहा और अंदर चला गया.

कुछ ही देर में रिमू घबराती हुई मेरे लिए चायनाश्ता ले कर आई तो मैं लगभग चीखते हुए बोला, ''यह सब क्या हो रहा था, जबकि तुम्हें पता है कि मैं इन सब अंधविश्वासों और ढकोसलों को नहीं मानता?''

''अरे बेटा, जन्मकुंडली का दोष शांत करवाने के लिए यह पूजा करवाना अत्यंत आवश्यक था. अब देखना तुम्हारा गृहस्थ जीवन बहुत अच्छे से चलेगा. बहुत पहुंचे हुए पंडितजी हैं और उन्होंने पूजा भी बहुत अच्छी करवाई है,'' रिमू के बोलने से पूर्व ही उस की मां ने अपनी सफाई दी.

''मांजी, यह सब मन का वहम है. क्या कमी है आप की बेटी को बताइए, जन्ममृत्यु, हारीबीमारी ये सब तो जीवन के एक हिस्से हैं. आज दुख है तो कल सुख भी आएगा. यदि पंडितजी इतने ही पहुंचे हुए हैं तो क्यों नहीं कोई अच्छी सी नौकरी प्राप्त कर ली, क्यों यजमान ढूंढ़ते फिरते हैं अपनी जीविका को चलाने के लिए.

''आप की और पापाजी की कुंडली में तो 30 गुण मिले थे पर फिर भी आप दोनों हमेशा लड़तेझगड़ते और एकदूसरे को अपमानित करते रहते हैं. आप तो इतनी आधुनिका हैं, फिर आप अपनी सोच को आधुनिक क्यों नहीं बना पाईं. गृहस्थ जीवन को सुखमय बनाना पतिपत्नी के हाथ में होता हैं न कि किसी पंडित के हाथ में. जो काम मुझे पसंद नहीं हैं वे मेरी पत्नी मेरी अनुपस्थिति में करेगी तो कैसे गृहस्थी सुखद हो सकेगी.''

मुझे नहीं पता कि मेरी बातों का उन पर क्या असर हुआ परंतु उस समय उन्होंने वहां से चले जाने में ही अपनी भलाई समझी. इस घटना के 2 दिनों बाद जब रीमा की मम्मी को हम स्टेशन छोड़ने गए तो उन में से एक पंडितजी के हमें प्लेटफौर्म पर दर्शन हुए. बढ़िया सिगरेट के कश खींचते हुए वे जींसटौप में किसी गुंडा टाइप आदमी के साथ बातचीत कर रहे थे.

मैं ने रिमू से कहा, ''देखो ये हैं तुम्हारे पंडितजी. जिन से तुम अपनी गृहस्थी में शांति करवाने चली थीं.''

''बाप रे, ये तो सिगरेट पी रहे हैं.'' उन्हें देख कर रीमा ने दांतों तले उंगली दबा ली. सासुमां को ट्रेन में बैठा कर जब हम घर आए तो हमारे पड़ोसी अपनी बेटी की शादी का कार्ड देने आ गए.

''बेटा, आप लोग अवश्य आइएगा. बड़ी मुशकिल से तय हो पाई हमारी बेटी की शादी. जहां भी जाओ लोग जन्मकुंडली मिलाने की बात करते और न मिलने पर शादी की बात आगे ही नहीं बढ़ पाती थी, पर एक पंडित ने ही हमें इस का तोड़ बता दिया कि पहले लड़के की जन्मपत्रिका ले लो और मैं उसी के अनुसार बेटी की पत्रिका बना दूंगा. हम ने ऐसा ही किया और चट मंगनी पट ब्याह हो गया. क्या करें बेटा कई जगह विवशता में चालाकी करनी पड़ती है,'' वे अपनी बेटी के विवाह के बारे में बताने लगे.

''क्या ऐसा भी होता है? फिर कुंडली मिलवाने का क्या मतलब?'' अब तक शांत बैठी रिमू अचरज से बोली.

''हां भाभीजी, क्यों नहीं, आजकल सब संभव है. पंडितजी को चढ़ावा चढ़ाओ और असंभव कार्य को भी पंडितजी से संभव करवाओ. दरअसल, भाभीजी यह कुंडली कुछ होती ही नहीं है, यह सब तो पंडितों के चोंचले हैं दानदक्षिणा प्राप्त करने के.

''अब हमारा तो अंतर्जातीय विवाह हुआ है. आज 35 वर्ष हो गए हमारे दांपत्य जीवन को. हर सुखदुख को हम ने खुशीखुशी झेला है. 35 वर्षों में लड़ाईझगड़ा तो छोड़िए, किसी भी प्रकार की अनबन तक नहीं हुई हम दोनों में. एकदूसरे को इतना समझते हैं हम दोनों. विवाह तो पतिपत्नी की समझदारी से सफल होते हैं, न कि कुंडली से.''

इस के बाद वे तो चले गए पर रिमू की आंखें अवश्य खोल गए क्योंकि जैसे ही मैं उन्हें बाहर छोड़ कर आया, रिमू मेरे गले लग गई, बोली, ''तुम सच कहते हो, यह कुंडली सिर्फ मन का वहम और पंडितजी के जीने का साधन है. अब मैं सब समझ गई हूं.'' ●

दोस्तियाप्पा

कहानी • आशा शर्मा

दादा से दादी एक यार की बात करतीं तो दादा चिढ़ जाते. समय ऐसा भी आया कि दादा ने एक दिन पोती मिन्नी से कहा कि आज एक खास दोस्त धरम आएगा. दादा के ऐसा कहने से मिन्नी चौंकी क्योंकि वह दादी की डायरी पढ़ चुकी थी.

दादी अकसर दादाजी से कहा करती थीं कि जिंदगी में एक यार तो होना ही चाहिए. सुनते ही दादाजी बिदक जाया करते थे.

'किसलिए?' वे चिढ़ कर पूछते.

'अपने सुखदुख साझा करने के लिए,' दादी का जवाब होता, जिसे सुन कर दादाजी और भी अधिक भड़क जाते.

'क्यों? घरपरिवार, मातापिता, भाईबहन, पतिसहेलियां काफी नहीं हैं जो यार की कमी खल रही है. भले घरों की औरतें इस तरह की बातें करती कभी देखी नहीं. हुंह, यार होना चाहिए,' दादाजी देर तक बड़बड़ाते रहते. यह अलग बात थी कि दादी को उस बड़बड़ाहट से कोई खास फर्क नहीं पड़ता था. वे मंदमंद मुसकराती रहती थीं.

मैं अकसर सोचा करती थी कि हमेशा सखीसहेलियों और देवरानीजेठानी से घिरी रहने वाली दादी का ऐसा कौन सा सुखदुख होता होगा जिसे साझा करने के लिए उन्हें किसी यार की जरूरत महसूस होती है.

''दादी, आप की तो इतनी सारी सहेलियां हैं, यार क्या इन से अलग होता है?'' एक दिन मैं ने दादी से पूछा तो दादी अपनी आदत के अनुसार हंस दीं. फिर मुझे एक कहानी सुनाने लगीं.

''मान ले, तुझे कुछ पैसों की जरूरत है. तू ने अपने बहुत से दोस्तों से मदद मांगी. कुछ ने सुनते ही बहाना बना कर तुझे टाल दिया. ऐसे लोगों को जानपहचान वाला कहते हैं. कुछ ने बहुत सोचा और हिसाब लगा कर देखा कि कहीं उधार की रकम डूब तो नहीं जाएगी. आश्वस्त होने के बाद तुझे समयसीमा में बांध कर मांगी गई रकम का कुछ हिस्सा दे कर तेरी मदद के लिए जो तैयार हो जाते हैं उन्हें मित्र कहते हैं. और जो दोस्त बिना एक भी सवाल किए चुपचाप तेरे हाथ में रकम धर दे, उसे ही यार कहते हैं. कुछ समझीं?'' दादी ने कहा.

''जी समझी यही कि जो दोस्त आप से सवालजवाब न करे, आप को व्यर्थ सलाहमशवरा न दे और हर समय आप के साथ खड़ा रहे वही आप का यार है. है न?'' मैं ने अपनी समझ से कहा.

''बिलकुल सही. लेकिन तेरे दादाजी को ये तीनों एक ही लगते हैं,'' कहते हुए दादी की आंखों में उदासी उतर आई. यार न होने की टीस उन्हें सालने लगी.

मैं बचपन से ही अपने दादादादी के साथ रहती हूं, क्योंकि मेरे मम्मीपापा दोनों नौकरी करते हैं. चूंकि दादाजी भी सरकारी सेवा में थे, इसलिए दादी न तो उन्हें अकेला छोड़ सकती थीं और न ही वे चाहती थीं कि उन की पोती आया और नौकरों के हाथों में पले. इसलिए, सब ने मिल कर तय किया कि मैं अपनी दादी के पास ही रहूंगी. बस, इसीलिए मेरा और दादी का दोस्तियाप्पा बना हुआ है.

जब से हमारे सामने वाले घर में सीमा आंटी रहने के लिए आई हैं तब से हमारे घर में भी रौनक बढ़ गई है. सीमा आंटी हैं ही इतनी मस्तमौला. जिधर से निकलती हैं, हंसी के अनार फोड़ती जाती हैं. चूंकि हमारे घर आमनेसामने हैं, इसलिए इन अनारों की रोशनी सब से ज्यादा हमारे घर पर ही होती है.

सीमा आंटी शायद कहीं नौकरी करती हैं. आंटी को गप्पें मारने का बहुत शौक है. औफिस से आने के बाद वे शाम ढलने तक दादीदादाजी के साथ गप्पें मारती रहती हैं. दादी कहीं इधरउधर गई भी हों तो भी उन्हें कोई खास फर्क नहीं पड़ता. चायकौफी के दौर में डूबी वे दादाजी के साथ ही देर तक गपियाती रहती हैं.

मैं ने कई बार नोटिस किया है कि जब दादाजी अकेले होते हैं तब सीमा आंटी के ठहाकों में गूंज अधिक होती है. उस समय दादाजी के चेहरे पर भी ललाई बढ़ जाती है. पिछले कुछ दिनों से तो तीनों का बाहर आनाजाना भी साथ ही होने लगा है.

जब से सीमा आंटी हमारी जिंदगी का

हिस्सा बनी हैं तब से दादाजी दादी के प्रति जरा नरम हो गए हैं. आजकल वे दादी के इस तर्क पर बहस नहीं करते कि जिंदगी में यार होना चाहिए कि नहीं. लेकिन हां, खुल कर इस की वकालत तो वे अब भी नहीं करते.

''आप को नहीं लगता कि सीमा आंटी दादाजी में ज्यादा ही इंटरैस्ट लेने लगी हैं,'' एक दिन मैं ने दादी को छेड़ा. दादी हंस दीं और बोलीं, ''शायद इसी से उन्हें जिंदगी में यार की अहमियत समझ में आ जाए.''

दादी की सहजता मुझे आश्चर्य में डाल रही थी. ''आप को जलन नहीं होती?'' मैं ने पूछा.

''किस बात की जलन?'' अब आश्चर्यचकित होने की बारी दादी की थी.

''अरे, आप उन की पत्नी हो. आप के पति के साथ कोई और समय बिता रहा है. आप को इसी बात की जलन होनी चाहिए और क्या?'' मैं ने अपनी बात साफ की.

''तो क्या हुआ, यार कहां पति या पत्नी के अधिकारों का अतिक्रमण करता है?'' दादी ने उसी सहजता से कहा. मैं उन की सरलता पर हंस दी.

आज दादी हमारे बीच नहीं हैं. अचानक उन्हें दिल का दौरा पड़ा और वे हम सब को हतप्रभ सा छोड़ कर अनंत यात्रा पर चल दीं. 15 दिनों बाद मम्मीपापा सामाजिक औपचारिकताएं निभा कर वापस चले गए. वे तो मुझे और दादाजी को भी अपने साथ ले जाने की जिद कर रहे थे लेकिन दादाजी किसी सूरत में इस घर को छोड़ कर जाने को तैयार नहीं हुए. मैं उन की देखभाल करने के लिए उन के पास रुक गई. वैसे भी, मेरी स्नातक की पढ़ाई अभी चल ही रही थी.

एक दोपहर दादी की अलमारी सहेजते समय मुझे उन के पुराने पर्स के अंदर एक छोटी सी चाबी मिली. सभी ताले टटोल लिए, लेकिन उस चाबी का कोई ताला मुझे नहीं मिला. बात आईगई हो गई. फिर एक दिन जब मैं ने दादी का पुराना बक्सा खोल कर देखा तो उस में एक छोटी सी कलात्मक मंजूषा मुझे दिखाई दी. उस पर लगा छोटा सा ताला मुझे उस छोटी चाबी की याद दिला गया. लगा कर देखा तो ताला खुल गया.

मंजूषा के भीतर मुझे एक पुरानी पीले पड़ते पन्नों वाली छोटी सी डायरी मिली. ताले का रहस्य जानने के लिए मैं दादाजी को बिना बताए उसे छिपा कर अपने साथ ले आई. रात को दादाजी के सोने के बाद मैं ने वह डायरी निकाल कर पढ़ना शुरू किया.

पन्नादरपन्ना दादी खुलती जा रही थीं. डायरी में जगहजगह किसी धरम का जिक्र था. डायरी में लिखी बातों के अनुसार मैं ने सहज अनुमान लगाया कि धरम दादी की प्रेम कहानी का नायक नहीं था, वह उन का यार था. जब भी वे परेशान होतीं तो सिर्फ धरम से बात करती थीं.

मुझे याद आया कि दादी अकसर छत पर जा कर फोन पर किसी से बात किया करती थीं. दादाजी के आते ही तुरंत नीचे दौड़ आती थीं. जब वे वापस नीचे आती थीं तो एकदम हवा सी हलकी होती थीं. मैं अंदाजा

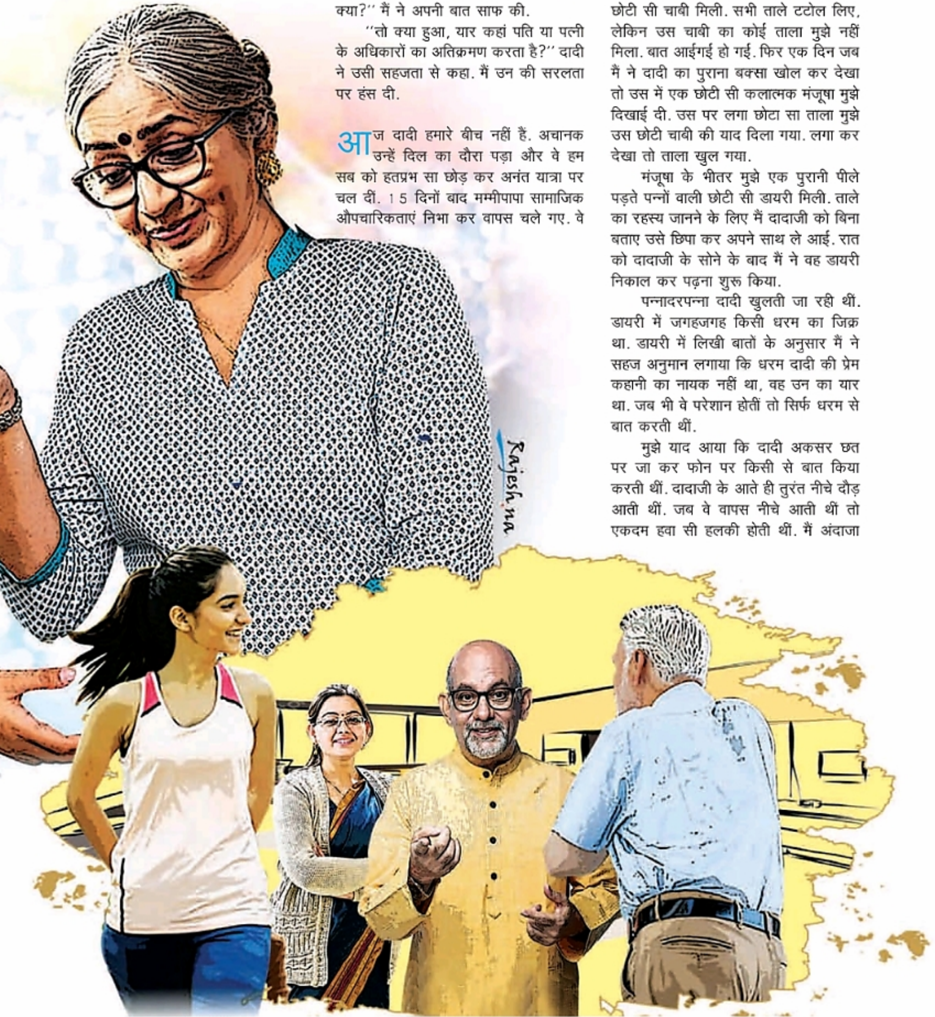

लगा रही हूं कि शायद वे धरम से ही बात करती होंगी.

दादी की डायरी क्या थी, दुखों का दस्तावेज थी. हरदम मुसकराती दादी अपनी हंसी के पीछे कितने दर्द छिपाए थीं, यह मुझे आज पता चल रहा है. पता नहीं क्यों दादाजी एक खलनायक की छवि में ढलते जा रहे हैं.

दादी और दादाजी का विवाह उन के समय के चलन के अनुसार घर के बड़ों का तय किया हुआ रिश्ता था. धरम उन दोनों के उन के बचपन का यार था. हालांकि, दुनियाजहान की बातेंशिकायतें दादी दादाजी से ही करती थीं लेकिन दादाजी का जिक्र या उन के प्रति उपजी नाराजगी को जताने के लिए भी तो कोई अंतरंग साथी होना चाहिए न. भावनाओं के मटके जहां छलकते थे, वह पनघट था धरम. यह बात दादाजी भी जानते थे लेकिन वे कभी भी स्त्रीपुरुष के याराने के समर्थक नहीं थे.

धीरेधीरे प्यार को अधिकार ढकने लगा और धरम दादाजी की आंखों में रेत सा अड़ने लगा. दादाजी को धरम के साथ दादी की निकटता डराने लगी. खोने का डर उन्हें अपराध करने के लिए उकसाने लगा. उन्होंने अपने प्यार का वास्ता दे कर दादी को उन के यार से दूर करने की साजिश की. दादाजी की खुशी और परिवार की सुखशांति बनाए रखने के लिए दादी ने धरम से दूरियां बना लीं. वे अब दादाजी के सामने धरम का जिक्र नहीं करती थीं. दादाजी को लगा कि वे अपने षड्यंत्र में कामयाब हो गए, लेकिन वे दादी को धरम से दूर कहां कर पाए.

डायरी इस बात की गवाह है कि दादी अपने आखिरी समय तक धरम से जुड़ी हुई थीं और मैं इस बात की गवाही पूरे होशोहवास में दे सकती हूं कि दादी की जिंदगी धरम को कलंकरहित यार का दर्जा दिलवाने की आस में ही पूरी हो गई.

आखिरी पन्ना पढ़ कर डायरी बंद करने लगी तो पाया कि मेरा चेहरा आंसुओं से तर था. दादी ने अपनी अंतिम पंक्तियों में लिखा था, ''हमारे समाज में सिर्फ व्यक्ति ही नहीं, बल्कि कुछ शब्द भी लैंगिक भेदभाव का दंश झेलते हैं. स्त्री और पुरुष के संदर्भ में उन की परिभाषा अलग होती है. उन्हीं अभागे शब्दों में से एक शब्द है 'यार'. उस का सामान्य अर्थ बहुत जिगरी होने से लगाया जाता है लेकिन जब यही शब्द कोई महिला किसी पुरुष के लिए इस्तेमाल करे तो उस के चरित्र की चादर पर काले धब्बे टांक दिए जाते हैं.''

पता नहीं दादी द्वारा लिखा गया यही पन्ना आखिरी था या इस के बाद दादी का कभी डायरी लिखने का मन ही नहीं हुआ, क्योंकि दादी ने किसी भी पन्ने पर कोई तारीख अंकित नहीं की थी. लेकिन इतना तो तय था कि दादी के याराने को न्याय नहीं मिला. काश, कोई जिंदगी में यार की अहमियत समझ सकता. काश, समाज याराने को स्त्रीपुरुष की सीमाओं से बाहर स्वीकार कर पाता.

दादी के न रहने पर दादाजी एकदम चुप से हो गए थे. कितने दिन तो घर से बाहर ही नहीं निकले. सीमा आंटी के आने पर जरूर उन का अबोला टूटता था. सीमा आंटी भी उन्हें अकेलेपन के खोल से बाहर लाने की पूरी कोशिश कर रही थीं. कोशिश थी, आखिर तो कामयाब होनी ही थी. दादाजी फिर से हंसनेबोलने लगे. रोज शाम सीमा आंटी का इंतजार करने लगे. जब भी कभी परेशान या दादी की याद में उदास होते, सब से पहला फोन सीमा आंटी को ही जाता.

आंटी भी अपने सारे जरूरी काम छोड़ कर उन का फोन अटैंड करतीं. मैं कई बार देखती कि जब दादाजी बोल रहे होते तब आंटी चुपचाप उन्हें सुनतीं. न वे अपनी तरफ से कोई सलाह देतीं और न ही कभी किसी काम में दादाजी की गलती निकाल कर उन्हें कठघरे में खड़ा करतीं. क्या वे दादाजी की यार थीं?

सीमा आंटी दादाजी के लिए उस दीवार जैसी हो गई थीं जिस के सहारे इंसान अपनी पीठ टिका कर बैठ जाता है और मौन आंसू बहा कर अपना दिल भी हलका कर लेता है, यह जानते हुए भी कि यह दीवार उस की किसी भी मुश्किल का हल नहीं है. लेकिन हां, दुखी होने पर रोने के लिए हर समय हाजिर जरूर है.

दादी को गए साल होने को आया. 2 दिनों बाद उन की बरसी है. दादाजी पूरी श्रद्धा के साथ आयोजन में जुटे हैं. सीमा आंटी उन की हरसंभव सहायता कर रही हैं. मेरे मम्मीपापा भी आ चुके हैं. घर में एक उदासी सी छाई है. लग रहा है जैसे दादाजी के भीतर कोई मंथन चल रहा है.

''मिन्नी, आज शाम मेरा एक दोस्त धरम आने वाला है,'' दादाजी ने कहा. सुनते ही मैं चौंक गई. 'धरम यानी दादी का यार... तो क्या दादाजी सब जान गए? क्या दादी की डायरी उन के हाथ लग गई?' मैं ने लपक कर अपनी अलमारी संभाली. दादी की डायरी तो जस की तस रखी थी. धरम अंकल के आने का कारण मेरी समझ में नहीं आ रहा था. मैं ने टोह लेने के लिए दादाजी को टटोला.

''धरम अंकल कौन हैं, पहले तो कभी नहीं आए हमारे घर?'' मैं ने पूछा.

''धरम तेरी दादी का जिगरी था. वह बेचारी इस रिश्ते को मान्यता दिलाने के लिए जिंदगीभर संघर्ष करती रही. लेकिन मैं ने कभी स्वीकार नहीं किया. आज जब अपने मन के पेंच खोलने के लिए किसी चाबी की जरूरत महसूस करता हूं तो उस का दर्द समझ में आता है,'' दादाजी की आंखों में आंसू थे.

दादी की बरसी पर धरम अंकल आए. पता नहीं दादाजी ने उन से क्या कहा कि दोनों देर तक एकदूसरे से लिपटे रोते रहे. सीमा आंटी भी उन के पास ही खड़ी थीं. थोड़ा सहज हुए दादाजी ने सीमा आंटी की तरफ इशारा करते हुए धरम अंकल से उन का परिचय करवाया. ''यह सीमा है. हमारी पड़ोसिन... मेरी यार.'' और तीनों मुसकरा उठे.

मैं भी खुश थी. आज दादी के याराने को मान्यता मिल गई थी. ●

दिल्ली प्रैस
सरिता
विश्वसनीय, निर्भीक, सुखद, सदा युवा पत्रिका
सुखसमृद्धि किस्मत से नहीं,
परिश्रम से मिलती है
भाग्य मूर्खों की गलतफहमी है
पाक्षिक पत्रिका
भाग्य व धर्मकर्म के चक्रव्यूह से बाहर निकाले, दिखाए समृद्धि के द्वार सरिता
संपर्क करें या http:www.delhipress.in/subscribe देखें.

गलोइंग स्किन के लिए
प्राकृतिक नुस्ख़ा

आयुर्वेदिक रूप मंत्रा फेस वॉश आपकी त्वचा से अतिरिक्त तेल, बाहरी संक्रमण, दाग-धब्बे कम करने, प्रदूषण, मुंहासे साफ कर आपकी त्वचा को स्वस्थ, कोमल बनाए, निखारने में सहायक है, जिससे आपको मिले ताजगी भरा अहसास।

New
Dr. Juneja's
Roop Mantra®
Ayurvedic Cream, Capsules & Face Wash

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND
Most Trusted Brand of Asia 2016
NO.1 BRAND
WORLD'S GREATEST BRANDS

Roop Mantra
CUCUMBER
Ayurvedic Medicinal Facewash
Roop Mantra
ALOEVERA
Ayurvedic Medicinal Facewash
Roop Mantra
NEEM
Ayurvedic Medicinal Facewash
Roop Mantra
MIX FRUIT
Ayurvedic Medicinal Facewash

• 24x7 Helpline: 87259 66666 • www.roopmantra.com

शुद्ध आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों से निर्मित

बौयफ्रैंड के साथ दीवाली

only books magazine

હવે મેળવો વૉટ્સએપ ગ્રુપ માં બુક & મેગેઝિન શ્રેષ્ઠ ગુજરાતી, હિન્દી, અંગ્રેજી, પુસ્તકો વાંચવા માટે એક માત્ર વૉટ્સએપ ગ્રુપ
🇮🇳 Only Book & Magazine 🇮🇳
આ ગ્રુપ માં જોડાવવા માટે
જય હિન્દ લખી ને વૉટ્સએપ મેસેજ કરો
9687042373
Or
Join Our WhatsApp group For Book & Magazine
Click here

दीवाली में आमतौर पर सब से बड़ी दिक्कत यह सामने आती है कि करीबियों के संग इस त्योहार को कैसे मनाएं. बहुत बार गलत ग्रीट करने के चलते शर्मिंदगी का सामना करना पड़ जाता है.

लेख • शैलेंद्र सिंह

दीवाली आते ही खुशियों का माहौल बनने लगता है. खुशियों को मिल कर मनाना चाहिए. ऐसे में दीवाली गर्लफ्रैंड और बौयफ्रैंड मिल कर मनाते हैं. आज समय बदल गया है. गर्लफ्रैंड और बौयफ्रैंड अब जौब वाले भी हैं. वे खुद पर निर्भर होते हैं. पहले गर्लफ्रैंड और बौयफ्रैंड टीनएज में होते थे तो उन के दायरे भी सीमित होते थे. आज युवा जल्दी ही जौब करने लगे हैं. इस के अलावा घरों से दूर होस्टल में या दूसरे शहरों में रह रहे हैं.

ऐसे में वे पहले के मुकाबले ज्यादा आजाद होते हैं. उन के सामने अब अवसर होते हैं कि वे आपस में मिल कर फैस्टिवल मना सकते हैं. पार्टीज करने के लिए जरूरी नहीं है कि महंगे होटल या पब में जाएं. किसी दोस्त के घर या छोटे होटल, पार्क में भी इस को कर सकते हैं.

प्रोफैशनल स्टडीज कर रही इसिका यादव कहती हैं, ''गर्लफ्रैंड और बौयफ्रैंड ही नहीं, हम अपने सामान्य फ्रैंड्स के साथ भी दीवाली कुछ खास तरह से मना सकते हैं.

इसिका यादव

कालेज और होस्टल में रहने वाले लोग छुटि्टयों में अपने घर जाते हैं. ऐसे में दीवाली से पहले दीवाली पार्टी और दीवाली के बाद भी पार्टी का आयोजन कर सकते हैं. उस में खास दोस्तों को बुला सकते हैं. पार्टी में डांस, म्यूजिक, गेम्स और कई तरह के प्राइजेज के साथ खानेपीने के अच्छे मैन्यू रख सकते हैं. युवाओं को यह अच्छा लगता है. दीवाली रोशनी यानी लाइटिंग का त्योहार होता है. पार्टी में लाइटिंग भी होनी चाहिए.''

होस्टल में रहने वाले और कोचिंग के जरिए जौब की तैयारी करने वाले कुछ युवाओं की जब जौब लग जाती है तो वे अपनी तरफ से भी ऐसी पार्टी का आयोजन दीवाली सैलिब्रेशन के साथ कर लेते हैं जिस से उन की सक्सैस पार्टी भी हो जाती है और दीवाली की सैलिब्रेशन पार्टी भी. अपनी उम्र और अपनी पसंद के लोगों के साथ पार्टी करने का आनंद ही अलग होता है. ऐसे में दीवाली सैलिब्रेशन पार्टी बहुत अच्छी होती है. ज्यादातर लोगों की प्लेसमैंट के बाद इन्हीं महीनों में जौब लग चुकी होती है तो वह एक खास अवसर भी होता है.''

अलग अंदाज में दें बधाई

दीवाली में बधाई देने का अंदाज पिछले साल से कुछ अलग हो, इस बात का खास खयाल रखें. पहले ग्रीटिंग कार्ड का जमाना था. इस के बाद एसएमएस आया और अब सोशल मीडिया आने के साथ व्हाट्सऐप के जरिए संदेश भेजे जाने लगे. कई बार लोग किसी और के भेजे गए बधाई संदेश आगे फौरवर्ड कर देते हैं.

ध्यान रखें, अब फौरवर्ड किए मैसेज में यह लिख कर आने लगा है कि यह मैसेज फौरवर्ड किया हुआ है. कुछ मैसेज में भेजने वाले का नाम लिखा होता है. कई बार जल्दी मैसेज भेजने के चक्कर में लोग दूसरे का नाम हटाना भूल जाते हैं. यह बहुत हास्यास्पद लगता है. जब भी किसी और का मैसेज आगे भेजते हैं तो उस को ध्यान से देख लें. गर्लफ्रैंड, बौयफ्रैंड ही नहीं, आम फ्रैंड्स को भी दीवाली की बधाई नए अंदाज में दें.

पूजा वाजपेई कहती हैं, ''कोशिश करें कि खास दोस्तों को मिल कर बधाई दें. अगर दोस्त किसी और शहर में है तो फोन से बधाई दें. बधाई देने जाएं तो अपने साथ कुछ गिफ्ट जरूर ले कर जाएं. दोस्त किसी बाहरी शहर में है तो उस को कुरियर से गिफ्ट भेज सकते हैं.

पूजा वाजपेई

Happy Diwali

''आजकल औनलाइन गिफ्ट भेजना सरल हो गया है. दीवाली में गिफ्ट की कीमत की जगह आप के इमोशन दिखने चाहिए, यही युवाओं को पंसद आता है. पार्टी भी केवल कौफी की हो तो भी बेहद अच्छी लगती है. पार्टी में इस बात का खयाल रखें कि किसी भी तरह की नशे की चीजों का प्रयोग न करें. आजकल पार्टियों में नशे का प्रयोग होने लगा है. युवा ऐसी पार्टी से बच कर रहें.''

उपहार में पैकिंग हो खास

उपहार देते समय इस बात का खास खयाल रखें कि गिफ्ट उस को पसंद आए. लड़कियों को डायमंड रिंग, नैकलैस, चौकलेट, परफ्यूम, एथनिक ड्रैसें पसंद आती हैं. ऐसे में अपने फ्रैंड की पसंद की चीजों को गिफ्ट में दें. किसी फ्रैंड को बुक्स बहुत अच्छी लगती हैं. आजकल तमाम तरह के गिफ्ट वाउचर भी हैं जिन को भी गिफ्ट की तरह से दे सकते हैं.

ब्यूटी सैलून के तमाम पैकेज होते हैं. वे अपनी गर्लफ्रैंड को दे सकते हैं. गिफ्ट आइटम की पैकिंग का काम करने वाली प्रीति शर्मा कहती हैं, ''गिफ्ट देते समय इस बात का खास खयाल रखें कि उस की पैकिंग बेहद आकर्षक हो. आजकल ऐसे बहुत सारे प्रयोग होने लगे हैं जिन से दीवाली खास हो जाती है. पैकिंग को देने वाले या पाने वाले की रुचि के हिसाब से भी तैयार किया जा सकता है.''

प्रीति शर्मा

लड़कों को उपहार देना हो तो अच्छी ड्रैस दे सकते हैं. जैकेट, शर्ट और टीशर्ट आज के युवा बहुत पसंद करते हैं. उन्हें सिलवर या डायमंड के सिक्के भी दे सकते हैं व होम डैकोर की चीजें दे सकते हैं. वाल स्टीकर भी दिए जा सकते हैं. अलगअलग तरह की कैंडल्स भी दी जा सकती हैं. इन सब के साथ खानेपीने की चीजें भी उपहार में दें.

दीवाली में प्रदूषण को ले कर भी जागरूकता की जरूरत होती है. ऐसे में जरूरी है कि हम गिफ्ट में छोटेछोटे प्लांट या बोनसाई भी दे सकते हैं. घर में हरीभरी चीजें देखने को मिलती हैं तो बहुत अच्छा लगता है.

'छप्पन भोग' मिठाई शौप के मालिक नमन गुप्ता कहते हैं, ''दीवाली गिफ्ट में अपने इलाके की मशहूर खानेपीने की चीजें दे सकते हैं. आज आसान बात यह है कि इन की औनलाइन शौपिंग कर के देशविदेश कहीं भी भेजा जा सकता है. ज्यादातर लोग एकजैसी खाने की चीजें ही भेजते हैं. सोहन पापड़ी को ले कर तमाम तरह के जोक्स बन चुके हैं. अगर आप अपने यहां की मशहूर खाने की चीजें उपहार में देंगे तो उस का अलग असर पड़ेगा.

''अब कुरियर से तय समय और दिन में भी डिलीवरी देने का सिस्टम बन गया है. ऐसे में दीवाली के दिन शाम को सैलिब्रेशन के समय ही गिफ्ट खास दोस्त तक पहुंच सकता है.'' ●

एकदूजे के हो जाने दो

इन हंसी पल में अपने,
प्रेम का इजहार करने दो,
अपनी नशीली आंखों का,
दीदार मुझ्रो करने दो.
अपने गुलाबी लबों को,
मेरे लबों पर रसपान करने दो.
अपने सौंदर्य को मेरी नजरों में,
कैद हो प्रेम गुणगान करने दो.
जमाने की साजिशों से,
खुद को बेपरवाह हो जाने दो.
अपने दिल से मेरे दिल का,
मिलन हो जाने दो.
है जो बेपनाह मोहब्बत,
इजहार हो जाने दो,
इन खूबसूरत चेहरों पर फिर,
मुसकान की मल्हार आने दो.
मिटा कर दूरियां मुझ से,
प्यार में निखर जाने दो.
तुम खुद को सौंप, मुझ से लिपट,
एकदूजे के हो जाने दो.
गर तुम्हारी आंखों में है प्यार,
मेरी जान जाने दो.

–नृपेंद्र अभिषेक 'नृप' ●

only books magazine

हम को यूं देखा न करो

जख्मों को कुरेदा न करो,
हम को यूं देखा न करो.

तेरे हुस्न के मारे हैं,
तीर यूं फेंका न करो.

कोई तो बात करो,
गुमसुम यूं बैठा न करो.

कैद पहले से ही हैं,
हम को यूं घेरा न करो.

आंख मिला के सनम,
नजरें यूं फेरा न करो.

–डा. अनिल चड्ढा 'समर्थ' ●

मुक्ता में नए अंकुर

के अंतर्गत हम नवोदित कवियों को मौका दे रहे हैं कि वे कुछ नए उद्गार, नई शैली की कविताएं लिख कर हमें भेजें. कविताओं में कुछ नयापन हो जो युवाओं की सोच को दर्शाए.

संपादक को कविता भेजने का पताः
दिल्ली प्रैस
ई-8, झंडेवाला एस्टेट,
रानी झांसी मार्ग नई दिल्ली-110055
या
editor@delhipress.biz पर ईमेल करें.
आप हमें 8527666772 पर
व्हाट्सऐप या मैसेज भी कर सकते हैं.

Divisa

सच्ची सहेली®

आयुर्वेदिक औषधीय टॉनिक

कठिन दर्द

चिड़चिड़ापन

थकान

कमजोरी

कमर कटना

इम्यूनिटी

आदि में सहायक

सच्ची सहेली
आयुर्वेदिक औषधीय टॉनिक
67 जड़ी-बूटियों से बना, महिलाओं के लिए मशहूर आयुर्वेदिक टॉनिक

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

WORLD'S GREATEST BRANDS 2015-16 IUA

अब पहले से ज्यादा फायदा

67 दुर्लभ प्राकृतिक जड़ी बूटियों से बना 'सच्ची सहेली' आयुर्वेदिक टॉनिक विशेष लाभकारी है।

24x7 Helpline: 77106 44444 | www.facebook.com/sachisaheli
Available at all medical & general stores

होस्टल वाली दीवाली

लेख • नसीम अंसारी कोचर

जो लोग होस्टल में रहे हैं उन्हें पता है कि वे उन की जिंदगी के कभी न भूलने वाले पल हैं. होस्टल की जिंदगी मजेदार भी होती है और परेशानियों से भरी भी. बावजूद इस के, होस्टल में रह कर त्योहारों के समय जो खुशियां मिलती हैं, जो आजादी और मस्ती मिलती है, वह कहीं और नहीं मिलती.

संध्या जब हैदराबाद से दिल्ली के एक एनजीओ में काम करने आई थी तो उस ने कई साल वुमन होस्टल में गुजारे थे. अब तो वह शादी कर के पति के घर में सैटल हो गई है मगर होस्टल के दिन उन्हें नहीं भूलते हैं. घर के ऐशोआराम से निकल कर कम संसाधनों और जुगाड़ों के बीच होस्टल की टफ लाइफ का भी अपना ही मजा था. उस जिंदगी को याद करते वक्त उन्हें सब से ज्यादा दीवाली की याद आती है.

संध्या कहती हैं, ''किसी आसपास के शहर से होती तो त्योहारों में जरूर घर भाग जाती, मगर दिल्ली से ट्रेन में हैदराबाद तक 2 दिन का सफर बड़ा कठिन लगता था और वह भी सिर्फ दोतीन दिन के लिए जाना बिलकुल ऐसा जैसे देहरी छू कर लौट आओ. शुरू के 2 साल तो मैं दीवाली पर घर गई, मगर बाद में होलीदीवाली सब होस्टल में ही मनाने लगी.

''दिल्ली के आसपास रहने वाली ज्यादातर लड़कियां घर चली जाती थीं. बस, थोड़ी सी बचती थीं. शुरू में तो त्योहार के समय खाली पड़े कमरे को देख कर मुझे भुतहा फीलिंग होती थी, मगर जब शाम को बची हुई लड़कियां होस्टल की छत पर इकट्ठी हो कर पटाखे छुड़ाती थीं तब बड़ा मजा आता था. हम 8-10 लड़कियां नई ड्रैसेस पहन कर सुबह से ही त्योहार की तैयारियों में जुट जाती थीं. हमारी वार्डन काफी सख्तमिजाज महिला थीं, मगर उस दिन उन का मातृत्व हम लड़कियों पर खूब छलकता था. वे सिंगल मदर थीं. पति से तलाक हो चुका था. 14 साल की उन की बेटी थी जो उन के साथ ही रहती थी. त्योहार के दिन होस्टल के रसोइए की छुट्टी रहती थी और किचन हम लड़कियों के हवाले होता था. ऐसे में विशेष मैन्यू तैयार किया जाता. दोपहर और रात के खाने के लिए मनपसंद सब्जियां, नौनवेज, पूड़ियां, पुलाव हम बनाते थे. इकट्ठे जब इतने सारे बंदे रसोई में पकाने के लिए जमा होते थे तो काम भी फटाफट निबट जाता था. शाम को हम सब होस्टल के गेट पर बड़ी सी रंगोली बनाने में जुट जाते थे. पूरे गेट और दीवार की मुंडेर को दीयों, फूलमालाओं और रंगोली से सजा देते थे.

only books magazine

''अंधेरा होते ही पूरा होस्टल दीयों की जगमगाहट से भर जाता था. दीवाली की रात हम सब छत पर इकट्ठे हो कर आधी रात तक जम कर पटाखे जलाते थे. मगर उस दिन दोस्ती के लिए तो सब को खुली छूट थी. खुद वार्डन भी उन लड़कियों के साथ मस्ती करती. खानेपीने के बाद जब हम सोते तो दूसरे दिन 12 बजे से पहले आंख न खुलती थी.

''फिर वार्डन की आवाज सुनाई देती कि जाओ सब मिल कर छत साफ करो. छत पर जले हुए पटाखों, दीयों, मोमबत्तियों, जूठे बरतनों का ढेर लगा होता था. सारा कूड़ा इकट्ठा कर के बोरियों में भर कर हम कूड़ा गाड़ी पर फेंकने जाते थे. घर की दीवाली में कभी इतना मजा नहीं आया जितना होस्टल की दीवाली में आया करता था. जबकि होस्टल की दीवाली में हमारी मेहनत दोगुनी होती थी लेकिन मजा भी दोगुना था. घर में तो मां ही पूरी रसोई बनाती थीं. वे ही पूजा करती थीं, फिर थोड़े से पटाखे हम भाईबहन महल्ले के बच्चों के साथ जला लेते थे. लो मन गई दीवाली. मगर होस्टल में त्योहार का आनंद ही अलग था. खुलेपन का एहसास जहां होस्टल में हुआ तो बियर का स्वाद भी पहलेपहल वहीं चखा.''

संध्या बताती हैं, ''मैं बचपन में बहुत दब्बू टाइप थी. मगर होस्टल में आने के बाद काफी बोल्ड हो गई. इस की वजह है होस्टल में हमें अपनी परेशानियों का हल खुद ही निकालना होता है. वहां मांबाप या बड़े भाईबहन नहीं होते जो परेशानी हल कर दें. एक बार की बात है, हमारे होस्टल में सुबह पानी की मोटर जल गई. अब किसी को कालेज के लिए निकलना था, किसी को औफिस के लिए. तब हम सब बाहर सरकारी नल से बाल्टी में पानी भरभर कर लाए और नहाया.

यह तो ऐसा मामला था जो शायद कभीकभार ही हो, लेकिन कुछ बातें तो लगभग हर गर्ल्स होस्टल या पीजी में देखने को मिलती हैं. हर होस्टल में चोरी जरूर होती है. चाहे वह कोई रहने वाली लड़की करे, चाहे कोई नौकर करे या कोई पड़ोसी ही आ कर कुछ चुरा ले जाए. लड़कियों की कटोरीचम्मच से ले कर अंडरगारमैंट्स तक गायब हो जाते थे.

''कभीकभी 2 लड़कियों के बीच इतनी भयानक लड़ाई हो जाती थी कि मामला हाथापाई तक पहुंच जाता था. उस में बीचबचाव करना और समझाना खुद की लाइफ को बहुत स्ट्रौंग बना देता है. होस्टल एक ऐसी जगह है जहां आजादी, मस्ती, टाइमपास, फैशन, झगड़े सब होते हैं. लड़कियां अपने घर से दूर, मांबाप की डांट से दूर अपनी उम्र की लड़कियों के साथ जिंदगी का पूरा मजा लेती हैं.''

वैसे होस्टल लाइफ को ले कर बहुत से लोग कहते हैं, 'जो कभी होस्टल में नहीं रहा, उस ने लाइफ में बहुतकुछ मिस किया है.' राजीव चन्नी अपनी होस्टल लाइफ याद करते हुए कहते हैं, ''पानी जैसी दाल, नहाने के लिए लंबी लाइन और खूसट वार्डन के अलावा भी बहुतकुछ होता है होस्टल में. घर के ऐशोआराम के बाद अगर आप ने होस्टल में संघर्ष कर लिया तो समझ लो, जीवन सफल हो गया.

''होस्टल में इंसान लाइफ के बहुत सारे स्किल्स सीख लेता है. जैसे, नहाते हुए पानी चले जाने पर शरीर पर लगे साबुन को गीले तौलिए से पोंछना और फ्रैश फील करना, दूसरे की शेविंग क्रीम या शैंपू इस्तेमाल कर लेना और उस को हवा भी न लगने देना, पौटी प्रैशर रोकने में सक्षम हो जाना, मनपसंद सब्जी न होने पर दहीचावल खा कर जीना, पनीर की सब्जी में से पनीर और आलू के परांठों में आलू ढूंढ़ना और जब हद गुजर जाए तो भूखहड़ताल करना वगैरहवगैरह और सब से अहम सीख है 'एकता'. एकजुट हो कर कोई भी काम करना, स्ट्राइक से ले कर त्योहार मनाने तक.

''दीवाली के दिन तो लड़कों का जोश देखने लायक होता था. कुछ घरेलू किस्म के लड़के जहां अपने कमरों में दीयामोमबत्तियां सजाते थे, पूजा करते और कुछ स्पैशल खाना बनाने में रसोइए की मदद करते थे, वहीं मर्द टाइप के लड़के इस जुगाड़ में रहते थे कि दारू और गर्लफ्रैंड के साथ त्योहार की रात कहां और कैसे मनाई जाए. दीवाली की रात ज्यादातर लड़के होस्टल के बाहर ही बिताते थे. कुछ सिनेमाहौल में तो कुछ होटल वगैरह में पाए जाते थे.

''होस्टल लाइफ थी. खुली छूट थी. कोई रोकटोक नहीं. जब तक चाहो, बाहर रहो. कोई पूछने वाला नहीं था. न मां की झिकझिक, न बाप की फटकार. कई बार तो हम सुबह के 4 बजे वापस आते और चौकीदार की जेब में 10 रुपए का नोट ठूंस कर आराम से कमरे में जा कर सो जाते. अलग ही आनंद था होस्टल लाइफ में त्योहार मनाने का. वे दिन तो जिंदगीभर नहीं भूलेंगे.'' ●

प्रेम समस्याएं

मैं अपनी गर्लफ्रैंड से बहुत प्यार करता हूं. वह भी मुझ पर जान छिड़कती है. हम फोन पर घंटों बातें करते हैं. मैं ने उस से सैक्स करने के बारे में कभी नहीं कहा. मैं शादी के बाद ही उस से सैक्स करना चाहता था लेकिन वह ही मुझ से सैक्स करने के लिए कहती है.

एक्साइटमैंट तो मुझे भी बहुत है लेकिन थोड़ा सा नर्वस फील कर रहा हूं. शादी के बाद सैक्स करना दूसरी बात होती है, गर्लफ्रैंड बीवी बन जाती है और उस पर पूरा हक होता है. लेकिन गर्लफ्रैंड को यदि सैक्स का मैं मजा न दे पाया तो डरता हूं कहीं वह मुझ से अपसैट न हो जाए, उस का प्यार मेरे लिए कम न हो जाए. थोड़ी घबराहट सी हो रही है जबकि गर्लफ्रैंड बहुत एक्साइटिड है और जल्दी ही किसी होटल में मिलने के लिए कह रही है. आप मेरी घबराहट दूर करने में कुछ मदद करें.

लड़कों के साथ अकसर ऐसा होता है. सैक्स के लिए एक्साइटिड तो बहुत होते हैं लेकिन पार्टनर के सामने सैक्स परफौर्मैंस देते वक्त कुछ ढीले पड़ जाते हैं. उन का मोरल डाउन हो जाता है.

लेकिन घबराइए मत, आप और आप की पार्टनर दोनों अपनी मरजी से सैक्स का मजा उठाने जा रहे हैं. आप दोनों मानसिक रूप से सैक्स के लिए तैयार हैं. बस, सैक्स करने के लिए उपयुक्त जगह ढूंढ़ें, जो स्ट्रैसफ्री हो और आप को कोई डिस्टर्ब करने वाला न हो.

प्यारभरा स्पर्श, चुंबन और फोरप्ले महत्त्वपूर्ण है. सैक्स में जल्दबाजी सारा मजा किरकिरा कर सकती है, इसलिए सैक्स की शुरुआत धीरेधीरे करें. महिलाओं को सैक्स के लिए उत्तेजित करने के लिए प्यारभरा स्पर्श, चुंबन जरूरी है, जब लगे कि पार्टनर इंटरकोर्स के लिए पूरी तरह तैयार है, उस के बाद ही आगे बढ़ें. पार्टनर कैसा सैक्स चाहता है, उसे और्गेज्म हुआ है या नहीं, पूछने में कोई शर्म न करें और यह सब करने में अपने साथी का पूरा साथ लें और दें.

सैक्स संबंध स्थापित करने के बाद कभी भी अलग न बैठें या लेटें, बल्कि अपने साथी के साथ प्यार करें, उस को किस करें. इस से आप के बीच का संबंध और गहरा होगा. संबंध बनाने के लिए अपने पार्टनर के साथ अपनी खुशी जाहिर करें.

मेरी उम्र 28 साल है. मुझे जल्दी कोई लड़की पसंद नहीं आती. मैं ने थोड़े दिनों पहले अपनी जौब चेंज की है और वहां मुझे एक लड़की बहुत ज्यादा पसंद आ गई है. कह सकते हैं कि मैं उस का दीवाना हो गया हूं. लेकिन वह मुझे भाव नहीं देती. बहुत एटीट्यूट दिखाती है. लगता है वह मुझ से इम्प्रैस नहीं हो पाएगी. बहुत उदास रहने लगा हूं क्योंकि मुझे पता है कि वह लड़की अच्छी है, अच्छी फैमिली से है. सब के साथ उस का व्यवहार अच्छा है. उस का कोई बौयफ्रैंड भी नहीं है. पता नहीं क्यों मुझ से भाव खाती है. क्या उस का खयाल दिल से निकाल दूं या और कोशिश कर के देखूं?

आप 28 साल के हैं. पढ़ेलिखे हैं, अच्छी जौब में हैं तो उस लड़की से आप सीधेसीधे अपने दिल की बात कह सकते हैं. यदि उस के दिल में आप के लिए थोड़ा भी कुछ होगा तो वह सोचने के लिए कुछ वक्त मांगेगी और यदि उसे आप पसंद ही नहीं तो साफ इनकार कर देगी.

अब आप को वह लड़की पसंद आ गई तो जरूरी तो नहीं कि वह भी आप को पसंद करे. इसलिए उस के पीछे अपना वक्त बरबाद मत कीजिए. कोई और लड़की ढूंढ़िए और अपना घर बसाइए.

मैं 26 वर्षीय युवती हूं. डेटिंग ऐप के जरिए मेरी एक लड़के से फ्रैंडशिप हुई. वह ग्वालियर का रहने वाला है. मैं लौंग डिस्टैंस रिलेशनशिप के चक्कर में पड़ना नहीं चाहती थी लेकिन हम दोनों के बीच बातचीत का इतना अच्छा सिलसिला चल पड़ा कि अब जब तक दिन में एक बार बात न हो तो चैन नहीं होता. सोचती हूं क्या हमारे बीच इस रिश्ते का कोई भविष्य हो पाएगा, कुछ समझ नहीं पा रही. राय दें.

लौंग डिस्टैंस रिलेशनशिप से एकदूसरे के प्रति समर्पण बढ़ता है. आप को अपने पार्टनर की अहमियत समझ में आ जाती है. यह रिलेशनशिप शारीरिक रिश्तों से ऊपर होती है क्योंकि जो रिश्ता सालोंसाल एकदूसरे को बिना देखे, बिना मिले टिक गया, समझो वह आगे भी टिक जाएगा क्योंकि वह रिश्ता इमोशनल कंनैक्ट के जरिए जुड़ा होता है.

इस रिश्ते का सब से बड़ा फायदा यह है कि इस में पार्टनर्स को अपने लिए समय मिल जाता है और वे अपनी पसंद का हर काम कर सकते हैं. जबकि आमतौर पर लोगों को वक्त नहीं मिल पाता और वे इसी बात की शिकायत करते हैं कि वे यह काम नहीं कर पाए या इस चीज के लिए वक्त नहीं निकाल पाए, जबकि लौंग डिस्टैंस रिलेशनशिप में इस चीज की कोई परेशानी ही नहीं.

इसलिए आप बेफिक्र रहिए. आप दोनों को जब लगता है कि वक्त आ गया है कि इस रिश्ते को मजबूत रिलेशन में बदलना चाहिए तो आपस में मिलें और बात कीजिए, दिक्कत क्या है.

मुझे एक क्रिश्चियन लड़की से प्यार हो गया है. मेरे घरवालों को कोई एतराज नहीं है लेकिन उस के घरवाले क्रिश्चियन लड़के से ही उस की शादी करना चाहते हैं. मैं उस से इतना प्यार करता हूं कि अपना धर्म परिवर्तन कर सकता हूं उस के लिए. मेरे मातापिता ने मेरी खुशी के लिए अपनी रजामंदी दे दी है. क्या ईसाई धर्म अपना कर मुझे कोई दिक्कत तो नहीं आएगी? यह कैसी प्रक्रिया होती है?

ईसाई धर्म अपनाने के बाद दिक्कत आएगी या नहीं आएगी, ऐसा कुछ तो हम भी नहीं कह सकते हैं, हां ईसाई बनने के लिए आप को बापतिस्मा की प्रक्रिया से गुजरना होगा. यह एक खास रिवाज है, जो औपचारिक रूप से धर्म ग्रहण करने की रस्म को पक्का कर देता है. अगर कभी जरूरत पड़े तो चर्च धर्म को ले कर सर्टिफिकेट भी इश्यू कर देते हैं.

वैसे यदि आप के घरवालों को कोई एतराज नहीं तो दोनों हिंदू रीतिरिवाज से शादी कर सकते हैं. लड़की के घरवाले देरसवेर अपनी नाराजगी छोड़ ही देंगे. विचार कीजिए. आगे आप की इच्छा. ●

SMS/WHATSAPP +918527666772

आप अपनी प्रेम समस्याएं, संपादकीय विभाग, मुक्ता, दिल्ली प्रैस भवन, ई–8, रानी झांसी मार्ग, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली–110055 पर भेजें. SMS/Whatsapp से भी भेज सकते हैं. ईमेल द्वारा mukta@delhipress.in पर भेजें. नाम गुप्त रखा जाएगा.

8 गुणकारी आयुर्वेदिक तेलों से निर्मित

Dr. Juneja's

डा.ऑर्थो®

Ayurvedic Oil, Capsules, Spray & Ointment

WORLD'S GREATEST BRANDS 2015-16 IUA

SELECTED NO. 1 BRAND INDIA 2014

Consumer Survey Report, MRG 2014

Helpful
in Painful
Conditions
Dr. Ortho
Oil
An Ayurvedic Proprietary Medicine
20% EXTRA
100ml+20ml Extra

ज्योतिष्मती तेल

जोड़ों में सूजन की समस्या को कम करने में मदद करता है।

गन्धपुरा तेल

जोड़ों के दर्द, मांसपेशियों के दर्द और गठिया में सहायक।

निर्गुण्डी तेल

नसों के दर्द और जोड़ों के दर्द में फायदेमंद है।

तारपीन तेल

जोड़ों में सूजन और दर्द के लिए सबसे अच्छा विकल्प है।

पुदीना तेल

पुराने जोड़ों के दर्द की स्थिति में अत्यधिक फायदेमंद है।

कपूर तेल

विभिन्न जोड़ों के दर्द में बहुत उपयोगी है।

अलसी तेल

जोड़ों और मांसपेशियों में सूजन को कम करता है।

तिल तेल

मांसपेशियों और जोड़ों के दर्द को कम करने में मदद करता है।

24x7 Helpline: 7876977777
www.drorthooil.com

8 गुणकारी आयुर्वेदिक तेलों के योग से निर्मित डॉ. ऑर्थो तेल अंदर तक समाकर दर्द को जड़ से कम करने में सहायता करता है। आयुर्वेदिक होने के कारण इसका प्रभाव अल्पकालिक नहीं लंबे समय तक बना रहता है।

लेख • भारत भूषण श्रीवास्तव

जुए में न करें जेब खाली

कहते हैं जुए की लत में जर, जोरू और जमीन, सब दांव पर लग जाते हैं. महाभारत से ले कर आज के भारत में जुए की गंदी लत ने न जाने कितने घरों को बरबाद किया है, कितने घरों में अशांति फैलाई है. क्या आप भी इस की लत में सबकुछ खोने को तैयार हैं?

तीजत्योहारों पर धार्मिक रीतिरिवाजों के नाम पर कई कुरीतियां भी हम ने पाल रखी हैं, जैसे होली पर शराब और भांग का नशा करना और दीवाली पर जुआ खेलना, जिस के पीछे अफवाह यह है कि आप अपनी किस्मत और आने वाले साल की आमदनी आंक सकते हैं. दीवाली पर जुए के पीछे पौराणिक कथा यह है कि इस दिन सनातनियों के सब से बड़े देवता शंकर ने अपनी पत्नी पार्वती के साथ जुआ खेला था, तब से यह रिवाज चल पड़ा.

बात सौ फीसदी सच है कि जिस धर्म के देवीदेवता तक जुआरी हों, उस के अनुयायियों को भला यह दैवीय रस्म निभाने से कौन रोक सकता है. महाभारत का जुए का किस्सा और भी ज्यादा मशहूर है जिस में कौरवों ने पांडवों से राजपाट तो दूर की बात है, उन की पत्नी द्रौपदी तक को जीत लिया था. मामा शकुनी ने ऐसे पांसे फेंके थे कि पांडव बेचारे 12 साल जंगलजंगल भटकते यहांवहां की धूल फांकते रहे थे. महाभारत की लड़ाई, जिस में हजारोंलाखों बेगुनाह मारे गए थे, के पीछे वजह यही जुआ था.

जुए के नुकसान आज भी ज्यों के त्यों हैं, फर्क इतना है कि युग, सतयुग, त्रेता या द्वापर न हो कर कलियुग है और किरदार यानी जुआरी आम लोग हैं जो पांडवों की तरह दांव पर दांव हारे हुए जुआरी की तरह लगाए चले जाते हैं लेकिन सुधरते नहीं. भोपाल के अनिमेश का ही उदाहरण लें जो पुणे में एक सौफ्टवेयर कंपनी में इंजीनियर है. पिछले साल दीवाली पर लौकडाउन के चलते घर नहीं आ पाए थे, सो दीवाली अपने किराए के फ्लैट में दोस्तों के साथ मनानी पड़ी. शाम को जम कर जाम छलके, फिर रात 9 बजे के करीब प्रशांत ने जुआ खेलने का प्रस्ताव रिवाज का हवाला देते रखा तो सभी पांचों दोस्तों ने हां कर दी.

दुनिया का सब से प्रचलित खेल 'तीन पत्ती,' जिस का एक और नाम फ्लैश है, शुरू हुआ तो यों ही था लेकिन खत्म यों ही नहीं हुआ. सुबह होतेहोते अनिमेष एकदो महीने की नहीं, बल्कि पूरे सालभर की सैलरी हार चुका था. 60 हजार तो नकदी गए और तकरीबन 2 लाख अनिमेश ने तुरंत औनलाइन ट्रांसफर किए, बाकी बचे और 2 लाख उस ने 6 महीनों की किस्तों में चुकाए. सालभर की बचत एक झटके में ठिकाने लग गई.

अनिमेश बताता है कि ये सेविंग के पैसे थे, जिन से वह पापा की मदद करना चाहता था. बड़ी बहन की शादी कभी भी तय हो सकती है, इस के लिए उस ने पापा से कह रखा था कि वह 5 लाख रुपए देगा. दीदी की शादी जल्द हो जाए, यह मनाते रहने वाला यह युवा अब रोज मन्नत मांगता है कि शादी अभी तय न हो क्योंकि वह दोबारा पैसे इकट्ठे कर रहा है जिस में करीब एक साल लगेगा.

अफसोस उसे है, लेकिन इस बात का ज्यादा है कि उस ने पक्की रन पर बेवजह लंबी चालें चलीं जबकि सामने वाला गुलाम की ट्रेल रख कर खेल रहा था. कई रात उसे नींद नहीं आई. सोते वक्त उसे अपनी पक्की रन और प्रशांत की ट्रेल ही दिखती रही जो चाल डबल किए जा रहा था. तब जाने क्यों उसे यह समझ नहीं आया कि सामने वाले के पास बड़ा पत्ता हो सकता है. अगली बार के लिए उस ने यह सबक नहीं लिया है कि जो हुआ सो हुआ लेकिन अब जुआ नहीं खेलना है बल्कि वह सोच यह रहा है कि फड़ के पैसे फड़ से ही वसूलेगा.

अब कौन उसे बताए और समझाए कि महाभारत के जुए में युधिष्ठिर ने भी हर बार यही सोचा था कि बस, इस बार दांव लग जाए, फिर तो पौ बारह है. युधिष्ठिर हार कर भी धर्मराज कहलाया लेकिन अनिमेश जैसे लोगों को क्या कहा जाए जो दिनरात की मेहनत से कमाया पैसा एक रात में गंवा देते हैं पर फिर भी जुए का लालच छोड़ नहीं पाते.

सिगरेट सरीखा ऐब

इस में शक नहीं कि जुए के खेल का अपना अलग रोमांच है लेकिन यह लत या शौक लगता कैसे है, इस सवाल का जवाब बहुत साफ है कि अधिकतर घरों में दीवाली का जुआ एक तरह से मान्य है. बच्चे हर साल बड़ों को रोशनी के इस त्योहार के दिनों में बड़े चाव से जुआ खेलते देखते हैं तो उन में भी जिज्ञासा पैदा हो जाती है और वे इस खेल के दांवपेंच भी जल्द सीख जाते हैं. बड़े होने पर होस्टल या अपने ही शहर की किसी फड़ पर वे भी भविष्य आजमाने लगते हैं.

यह बिलकुल सिगरेट की लत जैसा काम है जिस का पहला कश चोरीछिपे लिया जाता है. फिर धीरेधीरे यह आदत और फिर लत बन जाती है. चूंकि बड़े खुद गलत होते हैं, इसलिए बच्चों को यह कहते रोक नहीं पाते कि यह गलत है. गलत कहेंगे तो बच्चे के इस सवाल का जवाब वे नहीं दे पाएंगे कि अगर गलत है तो फिर आप क्यों खेलते हो.

अनिमेष का कहना है कि जब वह छोटा था तो पापा लंबी ब्लाइंड के बाद उस से ही पत्ते खुलवाते थे. इस के पीछे उन का अंधविश्वास यह था कि बच्चा पत्ते खोलेगा तो सामने वाले से बड़े ही निकलेंगे. कभीकभार ऐसा हो भी जाता था तो उन का अंधविश्वास और गहरा जाता था और अगर हार जाते थे तो समय को कोसते अगली चाल का इंतजार करने लगते थे.

भाग्यवादी और अंधविश्वासी बनाता जुआ

जैसे सिगरेट के नुकसान जानते हुए भी लोग स्मोकिंग करते हैं वैसा ही हाल जुए का है. लोग इस के नुकसान जानते हैं लेकिन इस के भी कश चाल की शक्ल में लगाते जाते हैं. एक हकीकत अनिमेश के उदाहरण से साबित भी होती है कि जुआ शुद्ध भाग्य और अंधविश्वास को पालतापोसता खेल है. अनुमान लगाना सहज मानवीय स्वभाव है. लेकिन हर अनुमान को सच होते देखना निरी बेवकूफी है. जुआ पूरी तरह अनुमान आधारित खेल है, इसलिए इस में रोमांच है.

लेकिन रोमांच से ज्यादा रोल किस्मत नाम की चीज का है जिस की आड़ ले कर इस की लत लगती है. लक्ष्मी अगर पूजा करने से आती होती तो देशदुनिया में कोई गरीब न होता. ठीक इसी तरह अगर किस्मत जुए से चमकती होती तो देश के कोई 30–40 करोड़ लोग बड़े भाग्यवान होते जो दीवाली की रात बतौर रस्म और बतौर लत जुआ खेलते हैं.

जुआ लोगों को विकट का अंधविश्वासी

भी बना देता है जो बुजदिली का दूसरा नाम है. जैसे, क्रिकेट और टैनिस सहित दूसरे खेलों के खिलाड़ियों के अपने मौलिक अंधविश्वास होते हैं कि कोई बल्ला उलटा पकड़ कर मैदान में आता है तो कोई बाएं पैर में पैड पहले बांधता है. इसी तरह जुआरियों के तो लाखों तरह के अंधविश्वास होते हैं. मसलन, कोई मन में गायत्री मंत्र बुदबुदा रहा होता है तो कोई पत्तों को उठाने से पहले उन्हें चूमता है तो कोई पहले उंगलियां चटका कर पत्ते खोलता है.

अब तो इस अंधविश्वासी मानसिकता पर बाकायदा बिजनैस भी करने वाले दुकान खोल कर धंधा करने लगे हैं. जुए में जीतने की शर्तिया तावीज बिकने लगी हैं तो कहीं सिद्ध बंगाली टाइप बाबा तांत्रिक क्रियाएं कर जुए में जितवाने की गारंटी लेने लगे हैं.

कोई गुरुजी सौ से ले कर 10 हजार रुपए तक जुए में जीतने का मंत्र बताने लगा है तो कई तो शकुनी की तरह कौड़ी यानी ताश के पत्ते भी सिद्ध कर देने लगे हैं. यह बकबास जुआरियों की अंधविश्वासी मानसिकता पर खूब फलफूल रही है. बस, बाजार में जुए का व्रत आना ही बाकी रह गया है कि इस अमावस या पूर्णिमा यह धूत व्रत रखो तो जीत पक्की है.

कैसे बचें

जुए की महिमा अपरंपार है जिस में जुआरी घंटों प्राकृतिक जरूरतों को दबाए बड़ी लगन से बैठा रहता है. लगातार हारते रहने के बाद भी उस की बुद्धि काम नहीं करती और जीत की उम्मीद में वह बहुतकुछ दांव पर लगा देता है. यह सोचना भी बेमानी है कि जो जीतते हैं, वाकई लक्ष्मी उन पर मेहरबान होती है और वे पैसे का सही इस्तेमाल करते हैं.

जीता हुआ पैसों को फुजूलखर्ची और गलत कामों में लगाता है क्योंकि उसे भी यह एहसास रहता है कि यह पैसा उस ने मेहनत से नहीं कमाया बल्कि जुए में जीता है. अनिमेश से जीतने के बाद प्रशांत ने कोई एक लाख रुपए तो शराबकबाब की पार्टियों में ही उड़ा दिए थे.

अब लाख टके का सवाल यह कि जुए से बचा कैसे जाए? इस के लिए कोई उपाय ढूंढ़ना मुश्किल है सिवा इस के कि दीवाली का कीमती वक्त अपनों के साथ आतिशबाजी चलाते और तरहतरह के पकवान खाते मनाया जाए. किसी फड़ पर जा कर जुआ खेलना एक बड़ा जोखिम वाला काम भी है. अगर पुलिस के छापे में पकड़े गए तो इज्जत तो मिट्टी में मिल ही जाती है, साथ ही 2–3 साल कोर्टकचहरी के चक्कर काटना उस से भी ज्यादा तकलीफदेह तजरबा साबित होता है.

दीवाली का जुआ सिर्फ दीवाली की रात ही नहीं होता, बल्कि 15 दिनों पहले से शुरू हो कर 15 दिन बाद तक चलता है और जो लोग फड़ का आयोजन करते हैं वे पहले से ही माहौल बनाना यानी उकसाना शुरू कर देते हैं कि क्या यार, साल में एक ही तो मौका आता है किस्मत आजमाने का और अगर दोचार हजार हार भी गए तो कोई कंगाल तो नहीं हो जाओगे. तुम तो किस्मत वाले हो, हो सकता है जीत ही जाओ.

इस तरह की बातों और इस तरह की बातें बनाने वालों से दूर रहना ही बचाव है. नहीं तो जेब खाली होनी तय है. सिगरेट का पहला कश ही उस की लत की शुरुआत होती है. यही थ्योरी जुए पर भी लागू होती है कि एक बार फड़ पर बैठ गए तो पांडव बनने में देर नहीं लगती. इस के बाद भी मन न माने तो शंकर की तरह अपनी पार्वती के साथ जुआ खेलें. इस से घर का पैसा घर में तो रहेगा. ●

दिल्ली प्रैस

धार्मिक त्यौहार औरतों पर दोहरा तिहरा बोझ हैं. कामकाजी औरतों को दफ्तर, पूजापाठ, तरहतरह के व्यंजन, सजनाधजना सब करना होता है तभी पूरे परिवार का त्यौहार बनता है.

क्या ऐसे त्यौहार औरतों के लिए सजा नहीं हैं जिन में पति व पुरुष हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें. यह सवाल उठाया जाना चाहिए या नहीं या इसे जीवन पद्धति समझ कर हर कोई ढोता रहे.

हर तरह की विषम परिस्थितियों, टेढ़े सवालों, कठिन फैसलों के लिए दिल्ली प्रैस की पत्रिकाएं अपनी अनूठी रचनाओं से तैयार करती हैं ताकि आप सुखी, संपन्न व बराबरी का जीवन जिएं. तर्क, तथ्य, मनोरंजन और निर्भीकता से भरी पत्रिकाएं पढ़ते रहिए ताकि जिंदगी खुशहाल रहे, सफल रहे.

सरिता ₹60 गृहशोभा ₹60 मुक्ता ₹30 सरस सलिल ₹12 मनोहर कहानियां ₹50 सत्यकथा ₹40

आज ही समाचारपत्र विक्रेता से मांगें या वार्षिक ग्राहक बनने की सूचना पाने के लिए ईमेल भेजें, circulation@delhipress.in

डिजिटल एडिशन भी उपलब्ध

Divisa
www.divisastore.com

SELECTED
NO. 1 BRAND
INDIA 2016

No More CONSTIPATION!

*If you are suffering from **Constipation, Gas or Acidity,** then use **'Pet Saffa' Ayurvedic Granules/Tablets** today only. Pet Saffa tastes good and doesn't stick in the mouth. It is non-habit forming and shows results from the first day.*

Raju Srivastav

20% EXTRA
Divisa
Dr. Juneja's
पेट सफा
Natural Laxative GRANULES
EFFECTIVE RELIEF FROM CONSTIPATION
Ayurvedic Proprietary Medicine
Safe for daily use

CONSTIPATION

ACIDITY

GAS

Dr. Juneja's ®

पेट सफा

Natural Laxative Granules & Tablets

24x7 Helpline: 91197 88888 • www.petsaffa.com
Available at all medical & general stores

20% EXTRA
पेट सफा

शनाया कपूर की बोल्डनैस

शनाया कपूर जो अभिनेता संजय कपूर की बेटी हैं, इन दिनों सोशल मीडिया पर बहुत ही ट्रैंड पर चल रही हैं. जल्द ही ये करण जौहर की मूवी में डैब्यू करने वाली हैं जिस के चलते बौलीवुड में फिर से नैपोटिज्म को ले कर चर्चा शुरू हो गई है.

शनाया कपूर ने अपनी पढ़ाई मुंबई के इकोले मौनडिले वर्ल्ड स्कूल से पूरी की है. बौलीवुड डैब्यू से पहले उन्होंने अपनी कजिन जाह्नवी कपूर की फिल्म 'गुंजन सक्सेना–द कारगिल गर्ल' में बतौर अस्सिटैंट डायरैक्टर के काम की जिम्मेदारी संभाली थी. यहां से उन्होंने फिल्ममेकिंग की जानकारी हासिल की है. 21 वर्षीय शनाया कपूर बहुत ही खूबसूरत तथा बोल्ड अदाओं वाली हैं, इन की खूबसूरती को ले कर आएदिन सोशल मीडिया पर इन की फोटो तथा वीडियो वायरल होती रहती हैं. इंस्टा पर इन के 8 लाख 97 हजार फौलोअर हैं. ●

le OF THE MONTH

सोचसमझ कर करें प्यार

लेख • डा. विनोद गुप्ता

कहते हैं, 'प्यार अंधा होता है. प्यार किया नहीं जाता है, हो जाता है. प्यार गरीबीअमीरी या जातिधर्म के बंधन से मुक्त होता है.' ये सब फिल्मों में भले ही होता हो, असल जिंदगी इस से सर्वथा भिन्न होती है. फिल्मों की नकल करते हुए प्यार करने के परिणाम अकसर दुखदायी ही होते हैं. सच तो यह है कि न तो प्यार अंधा होता है और न ही यह अपनेआप हो जाता है. प्यार तभी परवान चढ़ता है जब उसे सोचसमझ कर किया जाए.

किसी से प्यार करने से पूर्व अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि अवश्य देख लें. क्या आप के परिजन खुले विचारों के हैं? वे आप के प्यार को स्वीकार करेंगे या सिरे से नकार देंगे? क्या आप उन्हें अपना प्यार पाने के लिए मना पाएंगे? यदि आप के परिजन परंपरावादी हैं तो वे आप को इतनी आजादी नहीं देंगे.

यद्यपि जमाना बदल रहा है, फिर भी जाति, धर्म और संप्रदाय की बेड़ियां प्यार में बाधक बनती हैं. यदि आप को प्यार अपनी ही जातिधर्म के लड़केलड़की से है, तो भले ही उसे परिजन थोड़ीबहुत नानुकुर करने के बाद स्वीकार कर लें लेकिन यदि अन्य जातिधर्मावलंबी होने पर परिजनों की मंजूरी मिलना आसान नहीं है. क्या आप में इतना साहस है कि आप परिजनों की मरजी के खिलाफ जा कर शादी कर सकते हैं? क्या आप घर से भाग कर या कोर्ट मैरिज करने की स्थिति में हैं? क्या आप दोनों इस के लिए सहमत हैं?

यदि परिजनों ने आप की शादी को नकार दिया या अपने साथ रखने से इनकार कर दिया तो क्या आप अपनी गृहस्थी अलग बसाने में समर्थ हैं? आप की आय का स्रोत क्या और कितना है? क्या अलग गृहस्थी के लिए पर्याप्त होगा? यदि परिजनों से विद्रोह कर आप शादी करते हैं तो परिजन आप को अपनी धनसंपत्ति से बेदखल कर सकते हैं या आप से नाता तोड़ सकते हैं. क्या आप इस के लिए तैयार हैं? क्योंकि कई मातापिता ऐसे होते हैं जो उन की मरजी के खिलाफ शादी करने वाली संतान से भविष्य में कोई संबंध नहीं रखते. उन की दृष्टि में वह संतान उन के लिए मर चुकी होती है.

फिल्मों में गरीब लड़का और अमीर लड़की अथवा गरीब लड़की और अमीर लड़के के बीच प्रेमप्रसंग दिखाया जाता है. वास्तविक जीवन में ऐसा अपवादस्वरूप ही होता है. वैसे भी शादी बराबर वालों में हो तभी वह फलती या निभती है. यदि आप किसी अमीर लड़की से प्यार करते हैं और वह आप की गरीबी को स्वीकार कर भी लेती है, लेकिन शादी होने पर क्या आप उस के नखरे उठा पाएंगे? अमीर परिवार में पलीबढ़ी लड़की की ख्वाहिशें पूरी कर पाएंगे?

गरीबी में साथ जीनेमरने की कसमें खाने वाले प्रेमी जोड़ों का हश्र बहुत बुरा होता है. थोड़े ही दिनों में प्यार छूमंतर हो जाता है और किटकिट शुरू हो जाती है. यदि ऐसा न भी हो तो लड़की को अपनी ख्वाहिशों का गला घोंटना पड़ता है. ससुराल जाने पर दामाद के मन में हीनभावना आती है.

यदि लड़का अमीर है और लड़की गरीब तो भी उन के बीच प्यार अपवादस्परूप ही परवान चढ़ता है या उन की वैवाहिक जिंदगी सुखद होती है. अन्यथा अमीर ससुराल में गरीब लड़की एक मजाक बन कर या नौकरानी बन कर रह जाती है. देवरानी, जेठानी, सास, ननद उसे दोयम दर्जे का मानती हैं. ऐसे में वह दुखी ही रहती है.

किसी भी लड़के या लड़की से प्यार से पूर्व वैचारिक समानता भी देखपरख लें. यदि शारीरिक आकर्षण से आप प्यार कर बैठते हैं तो इस का अंजाम अच्छा नहीं होगा. दोनों के

प्यार करना गलत नहीं, लेकिन इस में समझदारी होनी बेहद जरूरी है. बहुत बार जोश में युवा ऐसे कदम उठाते हैं जिस के चलते पूरी जिंदगी उन्हें पछताना पड़ जाता है. ऐसे में जरूरी है कि प्यार जैसे गंभीर विषय पर सोचसमझ कर फैसला लिया जाए.

विचार मेल नहीं खाएंगे. एक की सोच पूर्व की होगी तो दूसरे की पश्चिम की. शादी के बाद उन में सामंजस्य के बजाय टकराव अधिक होगा.

किसी से प्यार करने से पूर्व यह देख लें कि उस की शिक्षा का स्तर आप के समकक्ष है या नहीं? पढ़ेलिखे और अनपढ़ के बीच प्यार हो सकता है लेकिन दोनों में आपसी समझ कभी विकसित नहीं हो पाएगी. डिग्रीधारी सदैव अनपढ़ को हेयदृष्टि से देखेगा. इस से सामने वाले की भावनाएं आहत होंगी.

यदि आप को पहले से ज्ञात है कि अमुक लड़का या लड़की चरित्रहीन है या बुरी आदतों के शिकार हैं, इस के बावजूद आप उस से प्यार करते हैं तो यह बुद्धिमानी नहीं है. यह अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने या आत्मघाती कदम उठाने जैसा है. आप का प्यार ऐसा होना चाहिए जिस पर आप को गर्व हो न कि शर्म.

किसी शराबी, जुआरी या ऐयाश लड़के से प्यार करना यह जानते हुए कि उस ने पहले ही कई लड़कियों की जिंदगी बिगाड़ी है या उन्हें धोखा दिया है, कहां की बुद्धिमता है? उस की नजर में लड़कियां केवल भोगवस्तु हैं, इस से अधिक और कुछ नहीं. वह उन का यौनशोषण कर उन्हें अपनी जिंदगी से बाहर निकाल देता है, ठीक दूध में से मक्खी निकालने की भांति. इसलिए किसी से आंख मींच कर प्यार करना ठीक नहीं. बाद में पछतावे के सिवा और कुछ हासिल नहीं होगा.

किसी चरित्रहीन या लूज कैरेक्टर लड़की से प्यार करना सदैव जोखिमभरा होता है. यदि बौयफ्रैंड बनाना और उसे छोड़ कर नए बौयफ्रैंड बनाना उस की फितरत या स्वभाव में है तो आप को अपने ऊपर कोफ्त होगी कि क्यों उस से प्यार किया. जानबूझ कर ऐसी लड़की से प्यार न करें जो केवल लड़कों के जज्बातों से खेलती हो या उन के पैसों पर गुलछर्रे उड़ाना उस की आदत हो.

प्यार करना बुरा नहीं है, पर उस में समझदारी होनी चाहिए. कई बार कोई कुंआरी लड़की किसी विवाहित पुरुष से प्यार कर बैठती है, क्या उस का प्यार परवान चढ़ सकता है? क्या वह सौतन बन कर रहना चाहेगी? क्योंकि एक पत्नी के रहते सामने वाला दूसरी शादी तो कर नहीं सकता और फिर क्या यह उस की विवाहित पत्नी के जीवन में जहर घोलना नहीं है? अपनी खुशी की खातिर किसी दूसरे की जिंदगी में जहर घोलना क्या जायज है?

कुछ लड़के ऐसे भी हो सकते हैं जो किसी विवाहित महिला से प्यार कर बैठते हैं और हर कीमत पर उसे पाना चाहते हैं. क्या किसी लड़के का दूसरे की पत्नी से प्यार करना ठीक है? जब तक उस का पति जिंदा है या उस से तलाक हो नहीं जाता, तब तक आप का प्यार परवान कैसे चढ़ेगा?

प्यार का औचित्य तभी है जब वह दोतरफा हो. एकतरफा प्यार कभी सफल नहीं होता. यदि आप किसी से प्यार करते हैं लेकिन उस की जिंदगी में पहले से ही कोई और है तो अपने कदम पीछे खींच लेने में ही बुद्धिमानी है. अपनी आंखें खुली रख कर ही किसी से प्यार करें. ●

दिल्ली प्रेस
गृहशोभा
सचेत, सक्षम, सफल, स्मार्ट
स्वतंत्र चट्टान से
विश्वास का आईना बनाए,
तैयार करे हर कल के लिए.
पाक्षिक पत्रिका
संपर्क करें या http:www.delhipress.in/subscribe देखें.

क्या देखें

सैक्स एजुकेशन 3

क्रिएटर–लौरी नन.
स्टारकास्ट–असा बटरफील्ड, गिल्लियन एंडरसन, एमा माके, कोनर, केदार विलियम्स व अन्य.
प्लेटफौर्म–नैटफ्लिक्स.
जौनर–कौमेडी ड्रामा.

यह एक टीन वैब शो है जो सैक्स संबंधित गंभीर विषयों को ले कर काफी मैच्योर है. नैटफ्लिक्स पर इस का तीसरा सीजन आया है. अपने शुरुआती 2 सीजन की तरह इस का कंटैंट भी काफी बोल्ड है, जो इस के नाम को जस्टिफाई करता है.

यह एक ब्रिटिश ड्रामा सीरीज है, जिस के केंद्र में मूरडेल स्कूल के स्टूडैंट्स हैं जो सैक्स से जुड़ी समस्याओं को ले कर काफी परेशान हैं. सीरीज के 2 मुख्य किरदार ओटिस और मेव उन की मदद करते हैं. वे स्कूल में एक प्राइवेट सैक्सोलौजिस्ट क्लीनिक के माध्यम से उन स्टूडैंट्स को सजेशन देते हैं. इस के साथ इन की आपस में भी एक इंट्रैस्टिंग कैमेस्ट्री बनने लगती है, जिस के बारे में पहले भी चर्चा की जा चुकी है.

तीसरे सीजन में पिछली कहानी को आगे बढ़ाया गया है. इस बार सैक्स से जुड़े अन्य विषयों को छुआ गया है. सब से शानदार बात है कि इस में एलजीबीटीक्यू प्लस की दिक्कतों, अंतर्द्वंद्वों को ईमानदारी से काफी स्पेस दिया गया है. ओटिस और मेव के अलावा कई अन्य किरदारों को बड़ा स्पेस दिया गया है. उन की पर्सनल लाइफ में ले जाया गया है जो काफी दिलचस्प बन पड़ा है.

इस के साथ ही, ओटिस की मां के रूप में सिंगल मदर के किरदार को जिस मजबूती के साथ गढ़ा गया है, वह काबिलेतारीफ है.

यह सीरीज कौमेडी जौनर की है. लेकिन बेहद हलके अंदाज में बेहद भारी बातें आसानी से दर्शकों को कन्वे कर देती हैं. पिछली दोनों सीजनों की तरह इस बार भी ग्रिप अच्छी है. खूबसूरत बात यह कि यह सीरीज सैक्स के टैबू को खत्म करने की अब तक की सब से अच्छी सीरीज में से एक है.

सैक्स को ले कर कई सारी धारणाएं हैं, कुछ सही हैं और बहुत सारी गलत. अगर एक लाइन में इस सीरीज के बारे में कहा जाए तो यह इन्हीं गलत धारणाओं को तोड़ती है. इस सीरीज को हर युवा को देखना चाहिए.

कोटा फैक्ट्री 2

क्रिएटर–सौरभ खन्ना, अरुण कुमार.
स्टारकास्ट–जितेंद्र कुमार, मयूर मोरे, रंजन राज, आलम खान, उर्वी सिंह, रेवाथई पिल्लई व अन्य.
प्लेटफौर्म–नैटफ्लिक्स.
जौनर–कौमेडी ड्रामा.

कोटा फैक्ट्री का पहला सीजन काफी लोकप्रिय हुआ था. आईआईटी इंजीनियरिंग की तैयारी कर रहे छात्रों पर बनी इस सीरीज को युवाओं ने काफी पसंद किया था. 2019 में इस का पहला सीजन आया था. तब यह टौप रेटेड सीरीज बन गई थी. इस के दूसरे सीजन के लिए काफी लंबा इंतजार व्यूअर्स को करना पड़ा.

सीजन 2 में भी कोटा में रह रहे छात्रों की दिक्कतों और स्ट्रगल्स को दिखाने की कोशिश की गई है. इस की खासीयत यह है कि इस में आईआईटी का सफर तय करने वाले छात्रों के जीवन को बहुत बारीक तरीके से दिखाया गया है.

सीरीज देख कर लगता है कि इसे लिखने वाले ने इस लाइफ को करीब से जिया है. इस सीरीज की एक और दिलचस्प बात है कि इसे पहले सीजन की ही तरह ब्लैक एंड व्हाइट में फिल्माया गया है क्योंकि यहां सपनों की दौड़ है, लेकिन वे पूरे नहीं हुए हैं.

सीजन 2 में दिखाया गया है कि शो के किरदार वैभव पांडे (मयूर मोरे) को माहेश्वरी क्लासेस में मुश्किलें आ रही हैं. वहीं, छात्रों के फेवरेट फिजिक्स टीचर जीतू भैया ने ट्यूशन सैंटर भी छोड़ दिया है. ऐसे में बच्चों में डर बैठ गया है. इस के साथ ही कोटा फैक्ट्री में जितेंद्र कुमार ने इस बार अपना खुद का कोचिंग सैंटर खोला है. उन का फोकस है कि कैसे वे अपना नयानया कोचिंग शुरू कर रहे हैं, क्या दिक्कतें उन्हें आ रही हैं.

यह सीजन प्रतियोगी परीक्षाओं के परिणामों के दौरान कोटा के वातावरण को सामने लाता है. आप पाते हैं कि ये नतीजे छात्रों के जीवन से ज्यादा संस्थानों और मीडिया के लिए अहम हो जाते हैं क्योंकि इस से उन का करोड़ों का कारोबार ऊपरनीचे होता है. यह सीजन भी देखा जा सकता है. युवाओं को खासा पसंद आएगी.

पोटलक

क्रिएटर–परवीन गखल व गौरव.
स्टारकास्ट–आराध्या अजाना, सिद्धांत कार्निक, सलोनी, हरमन सिंघा, आरव राना व अन्य.
प्लेटफौर्म–सोनी लिव.
जौनर–कौमेडी फैमिली.

SonyLIV Originals
POTLUCK

इंग्लिश में एक कहावत है, जिसे वैब सीरीज 'फैमिली मैन' में मनोज बाजपेयी अपने परिवार के साथ लंच करते हुए कहते हैं, 'द फैमिली हू ईट्स टुगैदर, स्टे टुगैदर.' यानी 'जो परिवार साथ में रह कर खाना खाता है, वह हमेशा साथ में रहता है.' इसी तरह 'पोटलक' एक इंग्लिश शब्द है जिस का अर्थ, 'जब परिवार का खाना अलगअलग भले बना हो पर एकसाथ मिल कर वे खुशीखुशी खाना मिलबांट कर खा रहे हों.'

यह सीरीज इस कहावत का तोड़मरोड़ है. जो परिवार की एकजुटता की अहमियत दिखाती है. भारत में वैब सीरीज के आगमन के शुरुआती समय में यह दिखा था कि क्राइम थ्रिल सीरीज अधिक बनने लगी थीं, पर आजकल पारिवारिक सीरीज को भी स्पेस मिल रहा है और दर्शक इन्हें पसंद कर रहे हैं, जो सुकूनदायक है.

इस सीरीज की कहानी थोड़ी सी देखीदेखी, लेकिन अलग सी लगेगी. सीरीज में रिटायर गोविंद शास्त्री (जतिन सियाल) है जो अलगअलग रह रहे 2 शादीशुदा बेटों (विक्रांत साहूकार) और ध्रुव (हरमन सिंघा) और एक अनमैरिड बेटी प्रेरणा (शिखा तलसानिया) को फिर से साथसाथ लाने की इच्छा रख रहा है. इसलिए वह बच्चों से अपनी झूठी बीमारी का नाटक करता है.

पिता की बीमारी के बाद तीनों बच्चे पोटलक के लिए राजी हो जाते हैं. यानी हफ्ते के एक दिन वे साथ में समय बिताएंगे. शो में दादादादी का पोतापोती के साथ लाड़दुलार, उन के व्यवहार से बहू को होने वाली दिक्कतें, बेटी की शादी की चिंता, मातापिता की कुछ आदतों से बच्चों का खीझ जाना, भाईबहन की नोकझोंक और गपशप जैसे पहलू कहानी को रफ्तार देते और बीचबीच में गुदगुदाते हैं.

इस सीरीज को देख कर तरहतरह के भाव जागते हैं. 90 के दशक में पारिवारिक शो काफी चर्चित हुए थे. लोग देखते भी थे. हलकीफुलकी कौमेडी, परिवारनुमा माहौल अच्छा लगता था. फिलहाल 'यह मेरी फैमिली' और 'गुल्लक' जैसी सीरीज इसी विधा में दर्शकों द्वारा देखी गईं और पसंद भी खासा की गईं.

यह सीरीज देखी जा सकती है, बेहद सौफ्ट है, मीठी कौमेडी है और दिमाग को हलका करती है.

–रोहित ●

समलैंगिकता
मिथक बनाम सच

लेख • प्रेक्षा सक्सेना

भारत में समलैंगिकता आज भी हंसीमजाक का हिस्सा मात्र है. कानून बनने के बाद भी लोग समलैंगिकता को स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं. ऐसे कई मिथक हैं जिन के चलते समलैंगिक लोगों के लिए वातावरण दमघोंटू बना हुआ है.

पिछले वर्ष फरवरी में एक फिल्म आई थी, 'शुभ मंगल ज्यादा सावधान'. उस में समलैंगिक जोड़े को अपनी शादी के लिए परिवार, समाज और मातापिता से संघर्ष करते हुए दिखाया गया था. वह कहीं न कहीं हमारे समाज की सचाई और समलैंगिकों के प्रति होने वाले व्यवहार के बहुत करीब थी.

अब जबकि समलैंगिकता गैरकानूनी नहीं रही है, ऐसे में समलैंगिक लोग खुल कर सामने आ रहे हैं. पहले अपने रिश्तों को स्वीकारने में ऐसे जोड़ों को जो झिझक होती थी अब वह कम हुई है. कानून कुछ भी कहे पर समाज में अभी भी ऐसे जोड़ों को स्वीकृति नहीं मिली है. लोग ऐसे जोड़ों को स्वीकारने में संकोच करते हैं क्योंकि उन के मन में इन लोगों को ले कर कई प्रकार की धारणाएं और पूर्वाग्रह हैं.

मिथक– यह वंशानुगत है.

सच– समलैंगिकता वंशानुगत नहीं होती, इस के लिए कई कारक जिम्मेदार हो सकते हैं. कई लोग बचपन से ही अपने मातापिता या भाईबहन पर भावनात्मक रूप से निर्भर रहते हैं, इस के कारण उन की रुचि पुरुष या महिलाओं में हो सकती है और वे समलैंगिकता अपना सकते हैं. जैंडर आइडैंटिटी डिसऔर्डर भी इस की एक वाजिब वजह है. यह एक ऐसी बीमारी है जो समलैंगिकता के लिए जिम्मेदार है.

इस बारे में कई थ्योरी हैं जिन के आधार पर बात की जाती है. अभी सहीसही कारणों का पता तो नहीं लग पाया है, फिर भी यह मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि समान सैक्स के लिए शारीरिक आकर्षण अप्राकृतिक तो नहीं है. वैसे भी, स्वभाव से मनुष्य बाइसैक्सुअल होता है. ऐसे में उस की रुचि किसी में भी हो सकती है.

डा. रीना ने बताया कि मेरे पास आने वाले जोड़ों में किसी के घर में कोई समलैंगिक नहीं था. उन के अनुसार, किसी को समलैंगिक बनाया नहीं जा सकता. समलैंगिक होना भी उतना ही स्वाभाविक है जितना एक स्त्री और पुरुष के बीच का रिश्ता.

मिथक– ये लोग असामान्य होते हैं.

सच– मनोचिकित्सकों की मानें तो ये लोग आप की और हमारी तरह ही सामान्य बुद्धि के होते हैं, बस, अंतर है सैक्स की रुचि का. बाकी अगर देखा जाए तो बुद्धि इन की भी सामान्य ही होती है. भावनाओं की बात करें तो ये बहुत अधिक भावुक होते हैं, क्योंकि हर वक्त इन्हें अपने स्वीकार्य को ले कर चिंता बनी रहती है. इन के लिए विरोध की पहली शुरुआत घर से ही हो जाती है क्योंकि मातापिता और परिवार समलैंगिकता को सामाजिक प्रतिष्ठा से जोड़ कर देखते हैं.

हरेक के लिए सामान्य होने की अलग परिभाषा होती है पर समलैंगिकों की बात करें तो इन के रिश्ते में संतानोत्पत्ति सामान्य तरीके से संभव नहीं. इसलिए इस रिश्ते को समाज सामान्य नहीं मानता. वंश को आगे बढ़ाना हमारी सामाजिक सोच का हिस्सा है, जिस की पूर्ति इस से संभव नहीं, पर मनोचिकित्सकों की मानें तो यहां बात सामान्य होने की नहीं बल्कि सैक्स में उन की रुचि की है.

यदि कोई व्यक्ति समान सैक्स के प्रति आकर्षण महसूस करता है तो यह पूरी तरह सामान्य बात है. मुंबई के हीरानंदानी अस्पताल के मनोचिकित्सक डा. हरीश शेट्टी के अनुसार, अपने ही सैक्स के व्यक्ति के साथ रुचि रखना एक सामान्य बात है क्योंकि ऐसे लोगों को विपरीत सैक्स के प्रति कोई आकर्षण नहीं होता.

मनोचिकित्सक कहते हैं कि एक समलैंगिकता स्वाभाविक तौर पर होती है जो खुद की चुनी हुई होती है और एक परिस्थितिजन्य होती है जिस में किसी अनजान भय, जैसे कि मैं विपरीत सैक्स वाले के साथ होने पर उसे संतुष्टि दे सकूंगा/सकूंगी या नहीं. यह छद्म समलैंगिकता है.

मिथक– इन्हें यौन संक्रमण ज्यादा होता है.

सच– कुछ लोगों का मत है कि सैक्सवर्कर्स, किन्नरों, नशे के इंजैक्शन लेने वाले नशेड़ियों और समलैंगिकों में एड्स व अन्य यौनजनित रोग होने की संभावना अधिक होती है. अभी कुछ समय पहले तक हमारे यहां समलैंगिकता को कानूनी रूप से मान्यता न होने के चलते समलैंगिक कपल घर बसा कर साथ नहीं रह पाते थे.

ऐसे में शारीरिक आवश्यकताओं के कारण एक से अधिक लोगों के साथ संबंध बन जाना इस का मुख्य कारण है. हालांकि, ऐसा नहीं है कि एसटीडी केवल समलैंगिकों को होती है. यह तो हेट्रोसैक्सुअल लोगों में भी होती है. यौन संबंधों में सुरक्षा का खयाल न रखा जाए तो भी ऐसे रोगों का खतरा होता है. इसलिए यह एक मिथक ही है कि समलैंगिकों में सैक्सुअल ट्रांसमिटेड डिसीज ज्यादा होती हैं.

मिथक– शादी इस का हल है.

सच– समलैंगिकों से जुड़ा सब से बड़ा मिथक यह है कि इन की शादी करा दी जाए तो सब ठीक हो जाएगा. जबकि, ऐसा बिलकुल भी नहीं है. कई बार मातापिता दबाव डाल कर शादी कर देते हैं, ऐसे में जिस से शादी होती है उस का जीवन तो खराब होता ही है बल्कि दूसरे का जीवन खराब करने का अपराधबोध उन के बच्चे को भी अवसादग्रस्त कर देता है.

सब मिला कर शादी इस का हल नहीं है. यदि आप के बच्चे ने आप को अपनी सैक्सुअल वरीयता के बारे में बता रखा है तो ऐसे में उस पर दबाव डाल कर शादी करने की भूल कभी न करें क्योंकि इस से 2 जीवन खराब होंगे. ऐसी शादियां सिवा असंतुष्टि के कुछ नहीं देतीं क्योंकि ऐसे लोगों में विपरीत सैक्स के प्रति कोई भावना नहीं पनप पाती. ऐसे में वह अपने साथी के साथ रिश्ते बनाने में असमर्थ होता है नतीजतन शादी टूट जाती है.

मिथक– ये वंशवृद्धि में असमर्थ होते हैं.

सच– लोग कहते हैं कि अगर ऐसी शादी होगी तो वंश का क्या होगा, क्योंकि प्राकृतिक तरीके से संतानोत्पत्ति संभव नहीं होगी, पर सच यह है कि यदि बच्चे की इच्छा है तो आजकल आईवीएफ द्वारा यह किया जा सकता है. बच्चा गोद लेना भी एक अच्छा विकल्प है. यदि ऐसा व्यक्ति जो विपरीत सैक्स के प्रति झुकाव महसूस नहीं करता वह अपने साथी के साथ रहता है और अपना जैविक बच्चा चाहता है तो एग डोनेशन या स्पर्म डोनेशन और सरोगेसी इस का अच्छा उपाय है. मनोचिकित्सकों के अनुसार, सैक्स सिर्फ बच्चा पैदा करने का जरिया नहीं है बल्कि यह भावनात्मक लगाव दर्शाने का और अपने साथी का प्यार पाने का तरीका भी है. ●

DELHI PRESS MAGAZINES
बच्चों की लोकप्रिय पत्रिका
चंपक
नए युग की प्रेरक मजेदार कहानियां
पाक्षिक पत्रिका
ग्राहक बनने के लिए http:www.delhipress.in/subscribe देखें.

बौलीवुड buzz

दीपिका और ऋतिक करेंगे फिल्म 'फाइटर' में ऐक्शन

'हम तुम', 'सलाम नमस्ते', 'तारा रमपमपम' और 'वार' सहित 7 फिल्में निर्देशित कर चुके सिद्धार्थ आनंद इन दिनों शाहरुख खान को ले कर फिल्म 'पठान' का निर्देशन कर रहे हैं तो वहीं अब उन्होंने फिल्म निर्माण के क्षेत्र में भी कदम रखने का ऐलान कर दिया है. सिद्धार्थ आनंद ने अपनी प्रोडक्शन कंपनी का नाम 'मरफ्लिक्स' रखा है, जिस के तहत वे ऐक्शन प्रधान फिल्म 'फाइटर' का निर्माण, लेखन व निर्देशन करने वाले हैं. यह सेना के इर्दगिर्द घूमने वाली भारत की पहली 'एरियल ऐक्शन' फिल्म होगी.

इस फिल्म में अभिनय करने के लिए सिद्धार्थ आनंद ने दीपिका पादुकोण के साथ ऋतिक रोशन को चुना है. दीपिका पादुकोण की यह पहली फिल्म होगी जिस में वे अभिनय के साथ ऐक्शन करती हुई नजर आएंगी. फिल्म 'फाइटर' में ऋतिक रोशन और दीपिका पादुकोण एअरफोर्स पायलट का किरदार निभाएंगे जिस के लिए दोनों खास ट्रेनिंग हासिल कर रहे हैं.

इस फिल्म को ले कर सिद्धार्थ आनंद कहते हैं, ''इस तरह की फिल्म पहली बार बन रही हैं. हम इस फिल्म के लिए हौलीवुड के ऐक्शन निर्देशकों की सेवा नहीं ले रहे हैं. हमारे देश में कई प्रतिभाएं हैं. फिल्म की कहानी भारतीय एअरफोर्स की है, इसलिए इस में यथार्थपरक ऐक्शन होगा. मैं ऋतिक रोशन के साथ 'बैंगबैंग' और 'वार' के बाद तीसरी बार काम करने वाला हूं, जबकि दीपिका पादुकोण के साथ पहली बार.''

'बिग बौस' फेम हिमांशी खुराना की पंजाबी फिल्म

कई म्यूजिक वीडियोज में अभिनय कर शोहरत बटोरने के बाद हिमांशी खुराना को 'बिग बौस' ने अपने घर का सदस्य बना दिया. तभी से कयास लगाए जा रहे थे कि हिमांशी खुराना फिल्मों से दूर क्यों हैं? बहरहाल, अब गिप्पी ग्रेवाल और नीरू बाजवा संग हिमांशी खुराना पंजाबी फिल्म 'शावा नी गिरधारी लाल' कर काफी उत्साहित हैं. इस पंजाबी फिल्म की शूटिंग पूरी हो चुकी है. फिलहाल हिमांशी खुराना इस की डबिंग कर रही हैं.

इस फिल्म की चर्चा करते हुए हिमांशी खुराना कहती हैं, ''फिल्म की शूटिंग की शुरुआत से ही जिस तरह से लोग इस फिल्म को अपना प्यार देने लगे थे, इस से मैं काफी अभिभूत हूं. इतना प्यार पाने के लिए यह बहुत अच्छा एहसास है. फिल्म में बहुत मजबूत कलाकार हैं और यह बड़ी उम्मीदों को बटोरने के लिए बाध्य है और यह उम्मीदों से पहले आया है.

''हम वर्तमान में शूटिंग पूरी होने के बाद इस की डबिंग कर इसे सिनेमाघरों में पहुंचाने के लिए आवश्यक तैयारी कर रहे हैं. इस फिल्म के 17 दिसंबर को रिलीज होने की उम्मीद है. पूरा परिवार एकसाथ इस फिल्म का आनंद लेगा और यह एक ऐसा समय होगा जब वे एकसाथ आ सकते हैं और बंधन में आ सकते हैं. यह मेरे लिए एक महत्त्वपूर्ण फिल्म है.''

धनुष की पत्नी ऐश्वर्या रजनीकांत की निर्देशन में वापसी

निर्देशक, गायक, भरत नाट्यम नृत्यांगना, दिग्गज अभिनेता रजनीकांत की बड़ी बेटी और अभिनेता धनुष की पत्नी ऐश्वर्या रजनीकांत 4 वर्षों बाद निर्देशन में वापसी करने जा रही हैं. 2004 में धनुष संग विवाह रचाने के 8 वर्षों बाद 2012 में उन्होंने पहली बार निर्देशन के क्षेत्र में कदम रखते हुए तमिल फिल्म 'तीन' में अपने पति धनुष व कमल हासन की बेटी श्रुति हासन को निर्देशित किया था. उस के बाद 2015 में तमिल फिल्म 'वई राजा वई' और 2017 में तमिल डौक्यूमैंट्री फिल्म 'सिनेमा वीरान' का निर्देशन किया था.

अब 4 वर्षों बाद निर्देशन में वापसी करते हुए ऐश्वर्या रजनीकांत हिंदी और तेलुगू की द्विभाषी रोमांचक फिल्म का निर्देशन करने जा रही हैं, जिस का निर्माण सुभासकरण और महावीर जैन के साथ लाइका प्रोडक्शन कंपनी करने वाली है.

इस पर ऐश्वर्या रजनीकांत कहती हैं, ''मैं इस फिल्म को निर्देशित करने के लिए अतिउत्साहित हूं. पहली बार मैं लाइका के साथ मिल कर अखिल भारतीय दर्शकों के लिए एक आवश्यक, पारिवारिक व मनोरंजक फिल्म बनाऊंगी,'' जबकि लाइका प्रोडक्शन की तरफ से कहा गया है, ''हम अपनी द्विभाषी फिल्म के लिए निर्देशक के तौर पर ऐश्वर्या रजनीकांत को शामिल कर रोमांचित हैं.''

श्रेयस तलपड़े की निर्देशन में दूसरी पारी

छोटे परदे पर अभिनय कर शोहरत हासिल करने के बाद 2015 में सुभाष घई निर्मित और नागेश कुकनूर निर्देशित फिल्म 'इकबाल' से अपने अभिनय कैरियर की शुरुआत करते हुए पहली फिल्म में ही सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता का राष्ट्रीय पुरस्कार जीत कर रातोंरात स्टार बन जाने वाले अभिनेता श्रेयश तलपड़े पिछले 16 वर्षों में कई बार अपनी अभिनय प्रतिभा का लोहा मनवाते आए हैं. अब तक वे हिंदी के अलावा मराठी भाषा की 45 फिल्मों में अभिनय कर चुके हैं. श्रेयश तलपड़े ने गंभीर किरदारों के साथ हास्य किरदार निभाते हुए भी काफी शोहरत हासिल की.

दूसरे कलाकारों की ही तरह श्रेयस तलपड़े ने 2014 में मराठी भाषा की फिल्म 'पोस्टर ब्वायज' का निर्माण किया. फिर 2017 में श्रेयस तलपड़े ने अपनी फिल्म 'पोस्टर वौयज' का हिंदी में रीमेक किया, जिस में सनी देओल और बौबी देओल के साथ खुद श्रेयस तलपड़े ने न केवल अभिनय किया बल्कि इस का निर्देशन भी किया. लेकिन इस फिल्म को बौक्स औफिस पर खास सफलता नसीब नहीं मिली थी.

लगभग 4 वर्षों बाद श्रेयस तलपड़े दूसरी बार निर्देशन के क्षेत्र में कदम रखते हुए फिल्म 'सरकार की सेवा में' बना रहे हैं. इस फिल्म का निर्देशन करने के साथसाथ वे इस में मुख्य किरदार भी निभा रहे हैं, जिस का निर्माण सैश वैंचर्स सोल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड के बैनर तले हरिहरन जे अय्यर कर रहे हैं.

श्रेयस तलपड़े का दावा है कि फिल्म 'सरकार की सेवा में' सामाजिक संदेश देने वाली निजी जीवन के घटनाक्रम से प्रेरित है. इस की ज्यादातर शूटिंग लखनऊ, उत्तर प्रदेश में की गई है. श्रेयस तलपड़े कहते हैं, ''हमारी इस फिल्म के शीर्षक की ही तरह इस की कहानी भी काफी यूनीक है. यह कहानी छोटे से शहर के एक लड़के की है, जिस के पिता सरकारी नौकरी में हैं और वे चाहते हैं कि उन के बेटे को भी सरकारी नौकरी मिल जाए. मगर दुर्भाग्य से उस लड़के को सरकार की सेवा करने का मौका नहीं मिलता और वह कार की सेवा में लग जाता है.''

अनुष्का श्रीवास्तव पहली बार नैगेटिव किरदार में

वीडियो शेयरिंग प्लेटफौर्म टिकटौक पर जानापहचाना चेहरा रहीं अनुष्का श्रीवास्तव बौलीवुड की चर्चित अदाकारा हैं. मुंबई में ही जन्मीं व पलीबढ़ी अनुष्का श्रीवास्तव ने 2008 में फिल्म 'सिर्फ' में अभिनय कर बौलीवुड में कदम रखा था पर इस से उन की कोई पहचान न बनी. उस के बाद उन्होंने कई मशहूर प्रोडक्टों के लिए मौडलिंग की.

इस के अलावा 'गोरी तेरा गांव बड़ा प्यारा', 'हमारी वाली गुड न्यूज', 'क्वींस हैं हम' और 'सावधान इंडिया' जैसे टीवी सीरियलों में अभिनय कर शोहरत बटोरी पर 2018 में राजपाल यादव के साथ फिल्म 'तिश्नगी' से उन्हें काफी बड़ी पहचान मिली. फिर उन्होंने उल्लू ऐप की वैब सीरीज 'रीति रिवाज', 'ताला चाबी' में मुख्य भूमिका निभाई. इतना ही नहीं, अनुष्का श्रीवास्तव ने अल्ताफ सैय्यद द्वारा स्वरबद्ध संगीत अलबम 'तू रब की मेहर' वीडियो में भी अभिनय किया.

इन दिनों अनुष्का वैब सीरीज 'गलती' के अलावा 'दंगल' टीवी पर प्रसारित हो रहे सीरियल 'रंजू की बेटियां' में रोशनी का नैगेटिव किरदार निभाते हुए सुर्खियां बटोर रही हैं.

अनुष्का श्रीवास्तव कहती हैं, ''मैं हमेशा बेहतरीन व उत्कृष्ट कहानी व किरदार वाली फिल्में, सीरियल व वैब सीरीज ही चुनती आई हूं. लेकिन अब तक मैं ने सकारात्मक किरदार ही निभाए. यहां तक कि मैं ने संगीत वीडियो में भी सकारात्मक किरदार ही निभाया. लेकिन जब मुझे पहली बार 'दंगल' टीवी के सफल सीरियल 'रंजू की बेटियां' में रोशनी का नैगेटिव किरदार निभाने के लिए बुलाया गया तो मैं ने सहर्ष स्वीकार कर लिया.''

स्नेहा नामनंदी फिल्मों से छोटे परदे की तरफ

'यह है पैरानौर्मल इश्क' और 'तोरबा' जैसी फिल्मों में अभिनय कर चुकी अभिनेत्री स्नेहा नामनंदी ने अब छोटे परदे की तरफ रुख कर लिया है. इन दिनों वे सीरियल 'बड़े अच्छे लगते हैं 2' में अभिनय कर रही हैं. लोग उन्हें शिवीना के किरदार में देख रहे हैं. वैसे, अब स्नेहा का मानना है कि लोगों ने उन्हें गुमराह कर रखा था जबकि फिल्म व टीवी में कोई फर्क नहीं है.

स्नेहा नामनंदी कहती हैं, ''मैं ने बौलीवुड फिल्मों के अलावा दक्षिण भारत की कई फिल्में व वैब सीरीज की हैं पर मैं ने फिल्मों तक ही खुद को सीमित कर रखा था क्योंकि लोगों ने मुझे सलाह दी थी कि मुझे सिर्फ फिल्म से ही चिपके रहना चाहिए. लोगों की सलाह थी कि मुझे टीवी की तरफ नहीं देखना चाहिए. लेकिन अब मैं देख रही हूं कि हर कलाकार अलगअलग माध्यम में काम कर रहा है. हर कलाकार कंटैंट पर ध्यान दे रहा है. तब मैं ने अपने हिसाब से शोध किया और अब मैं फिल्म व टीवी में कोई अंतर नहीं पाती. मैं तो टीवी सीरियल 'बड़े अच्छे लगते हैं 2' करते हुए एंजौय कर रही हूं.''

तारा सुतारिया बना रही हैं पेंटिंग

बहुमुखी प्रतिभा की धनी अदाकारा तारा सुतारिया गायन और अभिनय से ले कर कला तक औन और औफ स्क्रीन दोनों में लोगों का मन मोहती रहती हैं. अब तारा सुतारिया ने इंस्टाग्राम पर एक परिचित चेहरे के स्कैचिंग की कहानी साझा करने के लिए कैप्शन दिया है, ''कला के इस टुकड़े के साथ एक बहुत ही खास यात्रा की शुरुआत. बहुत जल्द आप सभी के साथ साझा कर रही हूं.''

तारा सुतारिया के इस इंस्टाग्राम पोस्ट से इस बात का एहसास होता है कि वे एक नए रोमांचक यात्रा या सहयोग पर जाने वाली हैं. तारा सुतारिया हमेशा युवा लड़कियों के लिए एक प्रेरणा रही हैं.

–शांतिस्वरूप त्रिपाठी ●

खूनी सुबूत

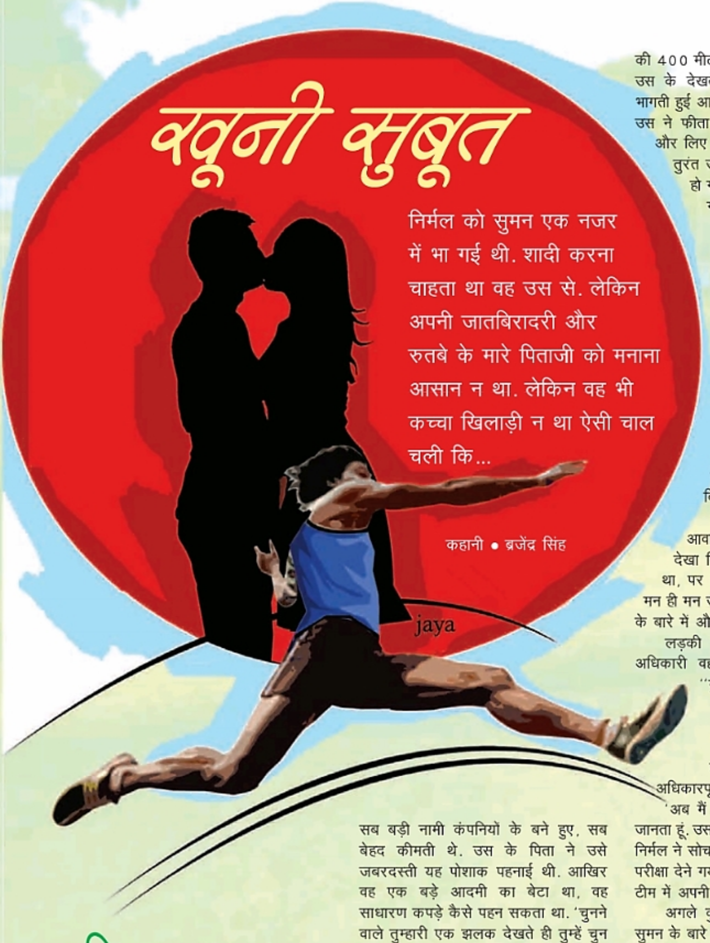

निर्मल को सुमन एक नजर में भा गई थी. शादी करना चाहता था वह उस से. लेकिन अपनी जातबिरादरी और रुतबे के मारे पिताजी को मनाना आसान न था. लेकिन वह भी कच्चा खिलाड़ी न था ऐसी चाल चली कि...

कहानी • ब्रजेंद्र सिंह

निर्मल ड्रैसिंग रूम में अपने कपड़े बदल कर खेल के मैदान में आया. प्रदेश के खेलकूद के दलों के लिए परीक्षाएं चल रही थीं, और निर्मल को पूरा विश्वास था कि वह लौंग जंप (लंबाई की कूद) में सफलता पाएगा. कालेज के खेलों में वह हमेशा लौंग जंप में प्रथम स्थान पाता आया था और डिग्री हासिल करने के बाद वह पिछले 2 सालों से लगातार अभ्यास कर रहा था.

निर्मल ने नीचे झांक कर अपनी पोशाक को जांचा. गंजी, निकर, मोजे, जूते, सब नए, सब बड़ी नामी कंपनियों के बने हुए, सब बेहद कीमती थे. उस के पिता ने उसे जबरदस्ती यह पोशाक पहनाई थी. आखिर वह एक बड़े आदमी का बेटा था, वह साधारण कपड़े कैसे पहन सकता था. 'चुनने वाले तुम्हारी एक झलक देखते ही तुम्हें चुन लेंगे,' उन्होंने कहा था.

निर्मल ने बहुत कोशिश की कि वह अपने पिता को समझाए कि चुनने वाले यह नहीं देखेंगे कि उस ने कैसी पोशाक पहनी है. वे यह देखेंगे कि उस ने कितनी लंबी छलांग लगाई है. पर उस के पिता उस की बात सुनने को तैयार ही नहीं थे. निर्मल मन में प्रार्थना कर रहा था कि उस के नए जूते उस के पैरों को कोई दिक्कत न दें.

निर्मल लौंग जंप अखाड़े की ओर जा रहा था कि उस ने देखा, बाईं तरफ महिलाओं की 400 मीटर दौड़ की परीक्षा चल रही थी. उस के देखतेदेखते दौड़ने वाली लड़कियां भागती हुई आईं और जो उन सब से आगे थी उस ने फीता तोड़ा. उस ने तीनचार कदम और लिए और फिर जमीन पर गिर गई. तुरंत उस के चारों ओर लोग इकट्ठा हो गए. निर्मल भी उन में शामिल हो गया. लड़की बेहोश सी पड़ी थी. कई लोग एकसाथ बोलने लगे और हड़बड़ी मच गई. इतने में लड़की ने अपनी आंखें खोलीं और उठ कर बैठ गई. अपने चारों ओर भीड़ देख कर शरमा गई और बोली, ''चिंता मत कीजिए, मुझे कुछ नहीं हुआ है. माफ कीजिए, पर मैं ने दौड़ में अपनी पूरी जान लगा दी थी, इस कारण शायद मैं कुछ समय के लिए बेहोश हो गई थी. पर अब मैं बिलकुल ठीकठाक हूं.''

निर्मल को उस की गहरी आवाज पसंद आई. उस ने यह भी देखा कि उस का चेहरा साधारण सा था, पर फिर भी मोहक प्रभाव का था. मन ही मन उस ने सोचा कि वह उस लड़की के बारे में और जानकारी हासिल करेगा.

लड़की खड़ी ही हुई थी कि एक अधिकारी वहां आया और उस से बोला ''मुबारक हो मिस सुमन. आप 400 मीटर दौड़ की विजेता हैं, इस कारण आप प्रदेश के दल की सदस्य चुनी गई हैं. इस विषय में आप को जल्दी ही अधिकारपूर्वक सूचना दी जाएगी.''

'अब मैं कम से कम उस का नाम तो जानता हूं. उस से दोस्ती करना आसान होगा,' निर्मल ने सोचा. फिर वह अपनी लौंग जंप की परीक्षा देने गया. उस ने आसानी से प्रदेश की टीम में अपनी जगह बना ली.

अगले कुछ दिनों के दौरान निर्मल ने सुमन के बारे में काफी जानकारी हासिल की, पर ऐसे तरीके से कि लोगों को शक न हो कि वह उस लड़की में कोई खास रुचि ले रहा है.

उस ने पता किया कि लड़की का पूरा नाम सुमन गुप्ता था और उस के पिता की एक बाजार में किराने की दुकान थी. उस को यह भी पता चला कि सुमन खेलकूद की शौकीन थी. 400 मीटर की दौड़ के अलावा वह हौकी और बास्केटबौल भी खेला करती थी. निर्मल ने तय किया कि वह सुमन से किसी न किसी बहाने 'गलती' से मिलेगा.

दो दिनों के बाद उसे मौका मिला. निर्मल

अभ्यास पूरा कर के ड्रैसिंग रूम की ओर लौट रहा था कि सुमन नजर आई. उस ने अपनी दौड़ उसी समय पूरी की थी और कमर पर हाथ रखे हांफती हुई खड़ी थी.

निर्मल उस के पास से गुजरने का बहाना बनाते हुए उस से बोला ''आप बहुत अच्छी तरह दौड़ती हैं.''

''धन्यवाद,'' सुमन ने गहरी सांसों के बीच जवाब दिया.

''मैं निर्मल पांडे हूं. मैं लौंग जंप दल का सदस्य हूं,'' कहते हुए निर्मल ने अपना हाथ बढ़ाया.

सुमन ने नाम के लिए हलके से उस के हाथ को छूते हुए हिलाया. ''मेरा नाम सुमन गुप्ता है. मैं 400 मीटर दौड़ लगाती हूं.''

बात आगे बढ़ाने के लिए निर्मल के पास कोई बहाना नहीं था. इस कारण उस ने विदाई ली, ''आप से मिल कर खुशी हुई मिस सुमन. आशा है हम फिर मिलेंगे. गुड बाय.''

निर्मल सुमन को अपने खयालों से निकाल नहीं सका. वह कोई न कोई बहाना बना कर, उस से तकरीबन रोज मिलने लगा. धीरेधीरे उसे महसूस होने लगा कि उस को सुमन से प्यार हो गया है.

निर्मल एक समझदार लड़का था. वह यह अच्छी तरह समझता था कि शादीब्याह के मामलों में जल्दबाजी अच्छी नहीं होती है. इन पर बहुत गंभीरता से विचार करना पड़ता है. इस कारण सुमन से शादी के बारे में काफी गहराई से वह सोचने लगा.

सुमन और उस की शादी की पहली रुकावट तो साफ नजर आ रही थी, जिस को पार करना तकरीबन असंभव लग रहा था. वह यह था कि निर्मल एक उच्च श्रेणी का ब्राह्मण था और सुमन कायस्थ थी. उस का पिता पुराने खयालात का एक सनातन पंथी था, जो दूसरी जाति की लड़की से शादी के लिए कभी राजी नहीं होता. खासकर नीची जाति की लड़की से तो बिलकुल भी नहीं.

निर्मल के पिता उस का रिश्ता एक कायस्थ लड़की के साथ शायद फिर भी मान जाते अगर वे किसी करोड़पति की बेटी होती. पर सुमन के पिता तो मामूली दुकानदार थे और निर्मल के पिता एक उद्योगपति, जिन के पास दो कारखानों के अलावा आधे दर्जन शोरूम थे. अपने से इतनी नीची सामाजिक स्थिति वाले खानदान की लड़की को अपनी बहू के रूप में वह कभी नहीं स्वीकार करते.

निर्मल को पता था कि अगर वह हिम्मत कर के अपने पिता के सामने सुमन से शादी की बात छेड़ता तो उस के पिता का बदला हुआ स्वरूप क्या होगा. वे कभी नहीं मानते कि वे जाति के आधार पर रिश्ता ठुकरा रहे हैं. पर वह अपने मन की बात छिपा कर कुछ ऐसे बोलते, 'निर्मल बेटे, मुझे इस शादी से कोई एतराज नहीं है. आखिरकार लड़की तुम्हारी पसंद की है. उस में कई गुण होंगे. पर यह सोचो कि लोग क्या कहेंगे. सुधीर पांडे, करोड़ों का मालिक, शहर का सब से बड़ा उद्योगपति, वह अपने एकमात्र बेटे की शादी एक छोटे से दुकानदार की बेटी से करवा रहा है. जरूर दाल में कुछ काला है. लड़के ने लड़की के साथ कुछ गड़बड़ की होगी और इसी कारण मजबूरन यह शादी करनी पड़ रही है. निर्मल बेटे, तुम लोगों के मुख को बंद नहीं कर सकोगे. इस तरह की दर्जनों अफवाहें फैलेंगी. तुम्हारी इज्जत मिट्टी में मिल जाएगी, साथसाथ मेरे भी नाम और इज्जत के चिथड़े हो जाएंगे.'

सोचतेसोचते निर्मल को एक नया खयाल आया. 'जरा धीरेधीरे चल मिस्टर' उस के दिमाग ने उसे टोका. 'तुम इतने आगे कैसे निकल गए? तुम्हें पक्का यकीन है कि सुमन तुम से शादी करना चाहेगी? तुम ने अभी तक उस से पूछा तक नहीं है और तुम चले हो उस के बारे में अपने पिता से बात करने. अगर तुम अपने पिता को किसी तरह मनवा ही लो और फिर सुमन तुम से शादी करने के लिए इनकार करे तो फिर तुम कहां के रहोगे?' मन ही मन में निर्मल ने निर्णय लिया कि जब वह अगली बार सुमन से मिलेगा तो उस के सामने शादी का प्रस्ताव अवश्य रखेगा.

दो दिनों बाद निर्मल और सुमन फिर मिले. निर्मल डर रहा था कि कहीं सुमन बुरा मान कर उसे डांट न दे. डर के मारे वह हकलाने लगा.

''क्या बात है निर्मल?'' सुमन ने पूछा. ''तुम ऐसे तो पहले कभी नहीं बात करते थे. लगता है तुम कुछ सोच रहे हो और बोल कुछ और रहे हो. सचसच बताओ तुम कहना क्या चाहते हो.''

निर्मल ने अपनी पूरी हिम्मत इकट्ठी की और बोल ही दिया ''सुमन मैं तुम से प्यार करता हूं और शादी करना चाहता हूं.''

सुमन चौंकी पर थोड़ी देर चुप रही. वह कुछ सोच रही थी.

निर्मल को चिंता होने लगी. तब सुमन ने जवाब दिया. ''मैं तुम्हारी पत्नी बनने से इनकार नहीं करूंगी. मुझे इस रिश्ते से कोई आपत्ति नहीं है. मैं तुम्हें काफी अच्छी तरह जानती हूं और तुम मुझे भले आदमी लगते हो. पर तुम तो जानते हो कि मैं एक हिंदुस्तानी लड़की हूं. मेरे खयालात इतने आधुनिक नहीं हैं कि मैं अपनी मनमरजी से शादी के लिए हां कर दूं. मुझे अपने मातापिता से बात कर के उन की आज्ञा लेनी होगी.''

''मैं तुम्हारी बात समझता हूं,'' निर्मल ने कहा. दोनों के बीच कुछ देर और बात हुई और यह तय हो गया कि दोनों अपनेअपने मातापिता से बात करने के बाद ही मामला आगे बढ़ाएंगे.

निर्मल को यह पता नहीं था कि सुमन को अपने मातापिता को मनाने में कितनी दिक्कत होगी, पर उस को पक्का यकीन था कि उस के अपने सामने जो समस्या थी, उसे सुलझाना तकरीबन असंभव था.

निर्मल को एक पूरा दिन लगा एक संभव योजना बनाने में, जिस से शायद सुमन से शादी का रास्ता खुल जाए.

उस दिन शाम को जब वह अपने मातापिता के साथ खाना खाने बैठा तो बातोंबातों में उस ने आकस्मिक स्वर में कहा, ''हमारे यहां एक बहुत सुंदर रूसी लड़की है. उस का नाम मारिया है और वह तैराकी की कोच है. वैसे तो उस की उम्र 35 साल है पर देखने में 20–22 साल की लगती है. मैं उसे बहुत पसंद करता हूं और हम दोनों एकदूसरे से लंबीलंबी बात करते रहते हैं.''

निर्मल ने देखा कि उस के पिता और उस की माता एकदूसरे से नजर मिला रहे थे. उस ने आगे कुछ और नहीं कहा और अपने खाना खाने में व्यस्त हो गया. उस के मातापिता भी चुप ही रहे. अगले दिन प्रशिक्षण के दौरान निर्मल सुमन से मिला.

''मैं तुम्हारे लिए अच्छी खबर लाई हूं,'' सुमन ने उस से कहा. ''मैं ने अपने मातापिता से तुम्हारे बारे में बातचीत की. शुरूशुरू में तो वे कुछ हैरान थे और शायद नाखुश भी कि मैं ने अपना वर स्वयं चुन लिया था. काफी बहस के बाद मैं ने उन को यकीन दिला दिया कि मामला कुछ गड़बड़ी का नहीं है और उन को तुम्हारे मातापिता से मिलने को राजी किया. तुम कहां तक पहुंचे हो?''

''मैं कोशिश कर रहा हूं,'' निर्मल ने जवाब दिया, ''मुझे थोड़ा और समय चाहिए. पर तुम चिंता मत करो, मुझे पक्का विश्वास है कि मेरे मातापिता तुम्हें बहू के रूप में स्वीकार कर लेंगे.''

उस दिन शाम को निर्मल ने अपनी योजना के अनुसार अगला कदम उठाया. खाना खाते हुए उस ने कहा, ''आज उस रूसी लड़की मारिया और मेरी काफी लंबीचौड़ी और गहराई में बातचीत हुई. हम अपने भविष्य के बारे में काफी देर तक विवेचन करते रहे. पिताजी, मैं उसे जल्दी ही यहां बुलाना चाहता हूं ताकि वह आप लोगों से मिले.''

HEMODEX®

Family Tonic

HEMODEX

SUPERIOR HAEMATINIC WITH ANTI-OXIDANTS

BALANCED NUTRITIONAL FORMULA

VITAMIN & PROTEIN

आपके सेहत का सच्चा साथी

Growmed उत्पादित आयरन टॉनिक लाल रक्तकण बढ़ाने एवं उत्तम स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है। इसमें है भरपूर आयरन, फोलिक एसीड, B_{12} तथा सौर्वीटॉल 70% जो कि चेहरा, जीभ आँख के पीलापन, चलने पर चक्कर आना या दम फूलना, उम्र से ज्यादा दिखना जैसे गम्भीर रोगों में अत्यधिक लाभदायी है।

GROWMED®

STOMAQUAR®

अब छुटकारा पाईये

पेट में गैस, जलन, अपच, खट्टे डकार, पुराना कब्ज, पेप्टिक अल्सर, आँव, सिरदर्द, बेचैनी, मुँह में छाले, हाइपर-एसीडीटी, हिचकी आना एवं पेट के अन्य तकलीफों से। साथ ही इसका नियमित सेवन रक्तचाप को भी सही रखने में काफी लाभदायक है।

PROTECTIVE COATING ACTION

Manufacturer :
Tablet, Capsule, Liquid, Ointment and Injection

ऑनलाईन ऑर्डर के लिए लॉग इन करें:
www.growmed.in

GUJARAT
GROWMED MKT. INDIA PVT. LTD.

• CALL : 9431237784, 8987383154

''निर्मल,'' उस के पिता ने गुस्से भरी आवाज में उसे टोका. ''मैं आशा करता हूं कि तुम इस लड़की से शादी करने की नहीं सोच रहे हो, क्योंकि अगर तुम्हारा ऐसा इरादा है तो मैं इसे कभी मंजूरी नहीं दूंगा. मेरे खानदान का लड़का एक विदेशी लड़की से शादी करे, वह भी जो शायद ईसाई धर्म की है और मेरे लड़के से अधिक उम्र की है. मैं किसी को मुंह दिखाने लायक नहीं रहूंगा. लोग मेरा हंसीमजाक उड़ाएंगे. मैं तुम्हें उस लड़की से फिर मिलने से मना करता हूं.''

निर्मल के दिल में खुशी हुई. उसे लग रहा था कि उस की योजना सफलता के रास्ते पर थी. पर उस ने मुख ऐसे बनाया जैसे वह कच्चा करेला खा रहा था. खाने को बीच में छोड़ कर वह खड़ा हो गया. ''मैं और नहीं खाऊंगा,'' कहते हुए वह अपने कमरे की ओर चला.

''निर्मल बेटे...'' उस की मां ने करुण स्वर में उसे रोकने की कोशिश की, पर निर्मल ने उन की ओर देखा तक नहीं.

''जाने दो,'' उस के पिता ने कहा. ''अगर आज रात भूखा रहेगा तो शायद उस के दिमाग में कुछ अक्ल आएगी.''

निर्मल अपने कमरे में गया और वहां अपनी भूख उन सैंडविच से मिटाई, जिन्हें वह घर आते समय बाजार से खरीद कर लाया था.

अगले दिन सुबह का नाश्ता खाते समय उस ने अपने चेहरे को बुरा सा बना रखा था और बातचीत सिर्फ हां या न तक सीमित रखी. उस के मातापिता भी कुछ खास नहीं बोले. उस रात को वह काफी देर से घर आया.

खाने की टेबल पर बैठते ही उस ने दुखभरी आवाज में कहा, ''मैं ने मारिया को समझा दिया कि हम दोनों भविष्य में फिर कभी न मिल सकेंगे, मेरे मातापिता उसे पसंद नहीं करते हैं. नापसंदी का कारण उस का विदेशी होना है. उस ने मुझ से काफी बहस की, पर अंत में मान गई कि आज से हमारे रास्ते अलग होंगे. मुझे आशा है कि अपने बेटे का दिल तोड़ कर आप लोग अब संतुष्ट हैं.''

''शाबाश बेटे,'' उस के पिता ने कहा. ''मैं जानता था कि तुम एक आज्ञाकारी पुत्र हो.''

निर्मल की मां ने कुछ नहीं कहा पर उस के चेहरे से लग रहा था कि उन के दिमाग से काफी बोझ उठ गया है.

दो दिनों बाद निर्मल ने अपनी अगली चाल चली. ''पिताजी,'' उस ने कहा, ''एक सुमन नाम की लड़की है. वह दौड़ लगाती है और वह प्रदेश के खेलकूद दल की सदस्य है. वह मेरी दोस्त है और कई दफे घर से लाया हुआ नमकीन या मीठा स्नैक मुझे भी खिलाती है. मैं उसे घर पर चाय के लिए बुलाना चाहता हूं.''

जैसे निर्मल ने सोचा था वैसा ही हुआ. उस के पिता की आंखों में चमक आ गई, ''क्या वह भारतीय नागरिक है?'' उन्होंने पूछा, ''क्या वह हिंदू है?''

''हां, वह तो नागरिक और हिंदू दोनों है,'' निर्मल ने जवाब दिया. ''पर इन बातों और उस की चाय पर आने में क्या रिश्ता है? मैं समझा नहीं.''

उस के पिता ने जवाब में दो और सवाल पूछे, ''उस की आयु क्या है और क्या वह शादीशुदा है?''

''वह मुझ से करीब 2 साल छोटी है और अभी तक कुंआरी है,'' निर्मल ने अपनी आवाज आश्चर्यजनक बनाने की कोशिश की, ''पर मैं पूछता हूं कि इन सवालों का सुमन का चाय पर आने से क्या लेनादेना है?''

''तुम सुमन को चाय पर अवश्य बुलाओ,'' उस के पिता ने कहा, ''और उस को बोलो कि वह अपने साथ अपने मातापिता को

भी लाए, ताकि तुम्हारी मां और मुझे भी कोई बातचीत करने को मिले.''

यह तो स्पष्ट था कि निर्मल का पिता जल्दी से जल्दी उसे किसी 'देसी' लड़की के साथ बांधना चाहता था, इस से पहले कि वह किसी और फिरंगी महिला के जाल में फंसे.

दोनों बुजुर्ग जोड़ियों की मुलाकात बहुत संतोषजनक रही. निर्मल को अपनी मां के बारे में कोई चिंता नहीं थी. वह जानता था कि आमतौर पर महिलाएं एकदूसरे से आसानी से घुलमिल जाती हैं. ऊपर से उस की मां इतने अमीर आदमी की पत्नी होने के बावजूद एक साधारण सी महिला थीं जो सब से दोस्ती रखती थीं. उस की चिंता अपने पिता के बारे में ही थी कि कहीं वे अपने वैभव की ताकत दिखा कर सुमन के पिता को नीचा दिखाने की कोशिश न करें.

निर्मल को चिंता करने की जरूरत नहीं थी. दोनों पिताओं ने जल्दी ही एक पारस्परिक शौक ढूंढ़ा– क्रिकेट. कुछ ही समय बाद दोनों खिलाड़ियों के बारे में और इन के टैस्ट मैचों और सैंचुरियों पर लंबी बातचीत में लीन हो गए थे.

निर्मल और सुमन की शादी जल्दी पक्की हो गई. कुछ ही दिनों बाद दोनों तरफ के घरवालों, रिश्तेदारों से सलाह ले कर, शादी की तारीख 6 हफ्ते बाद की रखी गई.

शादी उतनी धूमधाम से नहीं हुई जितनी निर्मल के पिता चाहते थे, पर उन दिनों प्रदेश में गैस्ट कंट्रोल औंर्डर (मेहमान नियंत्रण आदेश) लागू था जो बहुत सख्ती से बाध्य किया जा रहा था. इस के अनुसार मेहमानों की संख्या अधिक से अधिक 50 हो सकती थी. खाने के पकवानों पर भी बहुत पाबंदी थी. इस के बावजूद शादी की रस्मों में कोई बाधा नहीं पड़ी.

उस रात सजीधजी सुमन शादी के सजाए हुए बिस्तर पर बैठी निर्मल का इंतजार कर रही थी. कुछ देर बाद कमरे का दरवाजा खुला और निर्मल अंदर आया.

''अब तो मैं तुम्हें 'हे प्रिय' कह सकता हूं क्योंकि अब हम पतिपत्नी हैं,'' उस ने कहा और जेब से एक छोटी सी बोतल निकाली.

सुमन कुछ हैरान हुई और उस ने पूछा, ''बोतल में क्या है?''

''खून,'' निर्मल ने जवाब दिया.

सुमन चौंक गई, ''खून, किस का खून?''

''तुम्हारा खून,'' निर्मल ने कहा.

''मैं कुछ समझी नहीं.'' सुमन का दिमाग चकरा रहा था.

''मेरी प्यारी सुमन,'' निर्मल ने समझाया. ''मैं ने तुम्हें बता दिया था कि मेरे परिवार वाले सनातन पंथी हैं. उन की सोच पुराने जमाने की है. वे सुहागरात के बाद कल सुबह हमारे पलंग के चादर पर तुम्हारे खून का दाग देखना चाहते हैं. अगर दाग उन्हें नहीं मिले तो वे समझेंगे कि तुम कुंआरी नहीं थीं और तुम्हारी जिंदगी नरक बना देंगे और शायद मुझे मजबूर कर देंगे कि तुम को तलाक दे दूं.''

''हो... नहीं,'' सुमन बोल उठी.

''पर तुम्हें चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है,'' निर्मल ने उसे समझाया, ''मैं जानता हूं कि तुम जैसी खेलकूद में भाग लेने वाली लड़कियों का हाइमन अकसर तनाव के कारण फट जाता है. इस वजह से सुहागरात के यौन संबंध के समय खून नहीं निकलता तो अगर तुम पलंग से उठ जाओ तो मैं चादर पर तुम्हारा कुछ खून गिरा दूं.''

सुमन से कुछ जवाब देते न बना. ●

बच्चों के सम्पूर्ण शारीरिक विकास एवं विशेष इम्युनिटी बढ़ाने में सहयोग करता है।

GROWMED®

AD VITAMIN

बेबी ऑयल

नक्कालों से सावधान
ग्रोमेड
देखकर ही लें।

ग्रोमेड AD Vitamin Baby Oil बच्चों की हड्डियों एवं मांसपेशियों की मजबूती एवं सम्पूर्ण शारीरिक विकास के लिए जरूरी है।
घटक: Vitamin A 20000 I.U, Vitamin D 4000 I.U, Archis Oil, Olive Oil + Vitamin E

अब चंदन एवं गुलाब के खुशबू में भी

GROWMED®

PAIN RELIEF *Gel & Tablet*

आपको दर्द से दिलाए... मिनटों में आराम

ग्रोमेड पेन रिलीफ जेल के इस्तेमाल से कमर दर्द, घुटनों का दर्द, कंधे का दर्द, एड़ी दर्द तथा स्लिप डिस्क दर्द से तुरंत आराम मिलता है।

Manufacturer : Tablet, Capsule, Liquid, Ointment and Injection

ऑनलाईन ऑर्डर के लिए लॉग इन करें:
www.growmed.in

GUJARAT
GROWMED MKT. INDIA PVT. LTD.

• CALL : 9431237784, 8987383154

©: A-88094/2010
VITAMIN A, D, E AND OLIVE OIL
GROWMED
AD
VITAMIN
BABY OIL
FOR GROWTH AND VIGOUR OF BABIES
GUJARAT
GROWMED PAIN RELIEF Gel
Diclofenac Diethylamine, Oleum Lini, Methyl Salicylate & Menthol Gel
15 gm

Small Screen

सांवली सूरत के चलते रिजैक्शन

ऐक्ट्रैस हिना खान को कौन नहीं जानता. टीवी शो 'यह रिश्ता क्या कहलाता है' और 'कसौटी जिंदगी की' के माध्यम से वे घरघर लोकप्रिय हुईं. उन के फैन समय के साथ बड़े, खासकर लड़कियां हिना के स्टाइल से काफी प्रेरित रहती हैं. अभी हाल ही में हिना खान का म्यूजिक वीडियो 'मैं भी बरबाद' रिलीज हुआ जिस में वे अंगद बेदी के साथ नजर आईं.

हिना ने एक इंटरव्यू में बताया भी कि उन्हें भी ऐक्टिंग कैरियर के दौरान स्किन के कलर से रिजैक्शन झेलनी पड़ी है. हिना खान कश्मीर से हैं. उन का जन्म श्रीनगर में हुआ. हिना ने बताया कि उन के कश्मीरी होते हुए भी एक फिल्म में उन्हें कश्मीरी लड़की का रोल इसलिए नहीं दिया गया क्योंकि वे उतनी गोरी नहीं हैं.

हिना ने आगे कहा, ''टीम को कैरेक्टर के हिसाब से बहुत गोरी लड़की चाहिए थी. मुझे बहुत बुरा लगा क्योंकि जब आप उस भाषा को जानते हैं तो आप अपने कैरेक्टर को बेहतर तरीके से निभा सकते हैं.''

हिना टीवी की काफी सफल कलाकार हैं. यही कारण भी है कि अब उन्हें टीवी से आगे फिल्मों में भी खासा मौका मिलने लगा है. पिछले साल 2020 में 'अनलौक', 'विशलिस्ट', 'हैक्ड' जैसी फिल्मी प्रोजैक्ट कर उन्होंने दिखा दिया कि उन्हें फिल्मों में दर्शक देखना चाह रहे हैं.

वाहबिज की मौर्फ इमेज पर दोटूक

हाल ही में 'टीवी मसाला' नाम से चल रहे एक यूट्यूब चैनल ने अपने व्यूज बढ़ाने के लिए टीवी ऐक्ट्रैस वाहबिज दोराबजी की एक फोटो को यह कहते हुए मौर्फ किया कि वाहबिज का वेट काफी बढ़ गया है.

जिस पर नाराजगी जताते हुए वाहबिज ने मीडिया को साफ संदेश दिया कि वे किसी भी तरह के झूठ को बढ़ावा नहीं देंगी और न ही बरदाश्त करेंगी.

'प्यार की यह एक कहानी', 'बहू हमारी रजनीकांत' और 'सरस्वती चंद्र' जैसे शोज से लोकप्रियता हासिल कर चुकीं वाहबिज ने सोशल अकाउंट पर मौर्फ की गई अपनी इमेज के साथ अपनी रियल तसवीर साझा करते हुए लोगों को बताया है कि कैसे एक यूट्यूब चैनल ने उन की तसवीर के साथ छेड़छाड़ कर उन्हें मोटा दिखा कर लोगों को बहकाया है.

ऐक्ट्रैस ने लिखा है, ''यही वजह है कि मीडिया का एक हिस्सा हम लोगों की नजर में अपनी इज्जत खोता जा रहा है. पिछली रात मैं एक बर्थडे पार्टी में गई थी और इस पोर्टल ने मेरे बाइट के साथ यह किया है.

''मैं इस तरह का अपमान बरदाश्त नहीं करने वाली हूं. किसी को बदनाम कर के और बौडीशेम कर के लाइक्स और व्यूज बढ़ाने का यह तरीका बरदाश्त नहीं किया जा सकता. मैं सभी कलाकारों से अनुरोध करती हूं कि इस तरह के सतही जर्नलिज्म का विरोध करें.''

वाहबिज का यह कहना ठीक भी है. यूट्यूब पर ऐसे चैनलों की भरमार है जो खासकर महिला के बौडी इमेज को मौर्फ कर कुछ का कुछ कहानी बयान करवा देते हैं.

कपिल शर्मा की शो जर्नी

कौमेडियन कपिल शर्मा ने हाल ही में 'द कपिल शर्मा शो' के 500 से अधिक एपिसोड पूरे किए. कौमेडी नाइट विद कपिल नाम से कलर्स चैनल पर प्रसारित होने के बाद से यह शो दर्शकों के बीच बहुत हिट रहा है. टीवी जगत में कपिल शर्मा ने लोगों के दिलों में अपनी जगह बनाने के लिए कड़ी मेहनत की और तब बुलंदियों को छू सके.

आज जिस जगह पर कपिल हैं वह सभी को दिख रहा है, पर एक समय था जब कपिल शर्मा को बहुत से रिजैक्शन झेलने पड़े थे. अपने शो के लौंचिंग के बारे में एक इंटरव्यू में कपिल ने बताया कि उन्हें कलर्स टीवी में डांस रिऐलिटी 'झलक दिखला जा' को होस्ट करने के लिए बुलाया गया था.

कपिल ने बताया, ''मैं तैयार था तो उन्होंने मुझे प्रोडक्शन हाउस से मिलने के लिए कहा. मैं वहां उन से मिलने गया तो प्रोड्यूसर ने कहा, 'आप बहुत मोटे हैं. आप थोड़ा वजन कम करो'. मैं ने चैनल को इस बारे में बताया तो उन्होंने प्रोडक्शन हाउस से कहा कि बंदा अच्छा है, वजन बाद में कम कर लेगा. तब मैं ने उन से कहा कि वे लोग एक कौमेडी शो बनाने के बारे में क्यों नहीं सोचते.''

कपिल ने आगे कहा, ''चैनल इस आइडिया पर तैयार तो हो गया था मगर उस के पास खुद कोई आइडिया नहीं था,'' कपिल ने बताया, ''मैं वापस घर आया और सोचा कि मैं क्या बढ़िया कर सकता हूं. मैं स्टैंडअप, स्कैच कौमेडी और कौस्ट्यूम कौमेडी अच्छी कर लेता हूं तो मैं ने इन सब को एकसाथ एक शो में करने के बारे में सोचा.

''इस शो को लोगों का भरपूर प्यार मिला. हम ने शुरू में केवल 25 एपिसोड्स के बारे में सोचा था. मगर अब हमारे शो के 500 एपिसोड्स प्रसारित हो चुके हैं.''

–प्रतिनिधि ●

ZEE LABORATORIES

करोड़ो लोगो का आज़माया

MYFAIR
Cream
MYFAIR
Cream

झुर्रियां
काले घेरे
छाईया

MYFAIR
रूप संवारे, त्वचा निखारे

- क्रीम
- साबुन
- फेस वाश
- सन स्क्रीन

सम्पूर्ण कॉस्मेटिक रेंज
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध
9896134500

A Product of
ZEE LABORATORIES LTD.

Online Shopping:
www.myfair.in

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाए

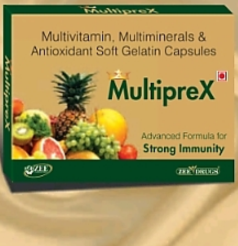
MultipreX
Multivitamin, Multiminerals & Antioxidant Soft Gelatin Capsules
MultipreX
Advanced Formula for
Strong Immunity
ZEE
ZEE DRUGS

MultipreX™

कैप्सूल, सिरप,
ओरल ड्राप्स, पाउडर

Multivitamin, Multiminerals
& Antioxidants

Advanced Formula For
Strong Immunity

रोजाना सेवन करे
9896134500
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध

प्रतिरक्षा में सुधार, विटामिन और मिनरल की कमी को पूरा कर रोगों से बचाए

(REGISTERED) RNI 6502/60 DL(c)-14/1090/2021-23 WPP U(c) 149/18/2021-23 P.O. SRT Nagar, ND-55 Posting Dt. 14 to 20 Published on 20/09/2021, Pgs. 48

PARLE
Happy Happy™
Choco-Chip Cookies
PARLE
Happy Happy
Choco-Chip Cookies
BISCUITS